राज्य आनंद संस्थान

संस्करण : अक्टूबर 2025
प्रकाशक : UHV-RAS Team

आनंद संचारिका

मासिक पत्रिका

आनंद सभा (सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर)

राज्य आनंद संस्थान, आनंद विभाग, म.प्र. शासन

अनुक्रमणिका

विषय वस्तु	पृष्ठ क्रमांक
पाठकों के लिए संदेश	3
प्रमुख लोगों के वक्तव्य (यूएचवी एवं आनंद संचारिका के बारे में)	4
विशेष आलेख : अध्ययन एवं अभ्यास	7
प्रतिभागियों का स्व-मूल्यांकन	10
मेरी यूएचवी यात्रा	13
आरएएस-यूएचवी के कार्यक्रम	14
स्नेह संचार सभा की रिपोर्ट	19
ऑनलाइन साप्ताहिक सभाएं	21
आरएएस-यूएचवी के आगामी कार्यक्रम	23
अन्य जगहों पर हो रहे यूएचवी के प्रयास	23
पाठकों के फीडबैक	24
यूएचवी छात्रों की दृष्टि से	26
मूल्य प्रेरणा पुष्प	28
विद्यालयों से प्राप्त आनंद सभा की झलकियाँ	29
सार्वभौमिक मानवीय मूल्य समाचार पत्रों की नज़र से	32
पाठकों के लिए महत्त्वपूर्ण सूचना	33

पाठकों के लिए संदेश

प्रिय पाठको,

सादर स्नेहिल अभिवादन,

आनंद संचारिका के चतुर्थ अंक को प्रकाशित करते हुए हम अत्यंत हर्षित महसूस कर रहे है क्योंकि 'आनंद संचारिका' केवल एक पत्रिका नहीं, बल्कि यह मानवता, संवेदना और कल्पनाशीलता की एक जीवंत धारा है। इसका उद्देश्य हमें अपने आपको, अपने कार्यों को भीतर से देखने, समझने और स्वयं में परिवर्तन लाने की प्रेरणा देना है। जब हम इच्छा, विचार और आशा — इन तीनों को एक साथ संतुलित दृष्टि से देखते हैं, तभी हमारा मन सच्चे आनंद का अनुभव करता है।

मानव जीवन का उद्देश्य केवल शारीरिक दृष्टि से उपयोग की वस्तुओं में समृद्धि प्राप्त करना नहीं है, बल्कि स्वयं में सुखी होना तथा पृथ्वी पर परस्पर मनुष्यों तथा मनुष्येतर प्रकृति के निमित्त सहजीवन से आनंद का सृजन और उसका वितरण करना है। हम में से प्रत्येक व्यक्ति सुखी रहना चाहता है, प्रसन्न रहना चाहता है — यह एक सार्वभौमिक सत्य है। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने शरीर के लिए आवश्यक सुविधाओं को परिभाषित कर उनका अर्जन करने के लायक न केवल कौशल प्राप्त करें, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर दूसरों को भी सुविधाएँ और सुख उपलब्ध करा सकें। हम सभी मानवीय मूल्यों को समझें, उनका आचरण करें तथा दूसरों के लिए भी समझदारी और ज़िम्मेदारी का स्रोत बनें। इस पृथ्वी पर सम्पूर्ण मानव लिंग, भाषा, जाति, प्रांत, देश की विविधताओं को भूलकर सम्पूर्ण प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व के रूप में रह सकें, तभी मानव जाति का सही मायने में विकास हो सकेगा।

हम सभी सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के अध्ययन में सहगामी हैं। अपने स्तर से तथा अपने संपर्क में आने वाले परिवार और संस्थाओं के साथ-साथ विद्यार्थियों तक भी इन जीवन मूल्यों के साथ जीने का प्रयास कर रहे हैं। प्रदेश स्तर पर अपने द्वारा किए जा रहे विभिन्न प्रयोगों को तथा कार्य की प्रगति को हम लोग नियमित रूप से 'आनंद संचरिका' के माध्यम से साझा करते हैं ताकि एक दूसरे के अनुभवों तथा कार्यों से हमें प्रेरणा प्राप्त हो सके। संचारिका का प्रत्येक अंक हमें यह प्रेरणा देता है कि हम अपने भीतर झाँकें, अपनी सोच को व्यापक बनाएं और जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन लाकर अपने 'मानव होने' को सार्थक बनाएं।

आनंद संचारिका अपने हर एक नए अंक में और अधिक आकर्षक और रोचक होती जा रही है। स्कूल शिक्षा, उच्च शिक्षा और जनसामान्य के लिए राज्य आनंद संस्थान और यूएचवी टीम के द्वारा नियमित रूप से सार्वभौमिक मानवीय मूल्य आधारित "आनन्द की ओर" शीर्षक से तीन दिवसीय और पांच दिवसीय कार्यशालाएं संचालित की जा रहीं हैं। सेल्फ डेवलपमेंट और टीम डेवलेपमेंट के लिए भी नियमित साप्ताहिक ऑनलाइन कार्यशालाएं एवं स्नेह संचार सभाएं, संभाग और जिला स्तर पर आयोजित हो रहीं हैं, जिससे मध्य प्रदेश में मूल्य शिक्षा के प्रसार हेतु एक सुदृढ़ टीम तैयार होती जा रही है और शिक्षकों, छात्रों के साथ-साथ अभिभावकों तक पहुंचने की संभावनाओं के द्वार भी खुलते नज़र आ रहे हैं।

आनंद संचारिका के माध्यम से सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों की शिक्षा के कार्य में योगदान दे रही पूरी टीम तथा इस कार्य में लगे सभी पाठकों को अनेक शुभकामनाएं और साधुवाद।

श्री धीरेन्द्र चतुर्वेदी

सेवानिवृत्त अपर संचालक,

लोक शिक्षण संचालनालय, भोपाल म. प्र.

प्रमुख लोगों के वक्तव्य : यू.एच.वी. एवं आनंद संचारिका के बारे में

"आनंद संचारिका विद्यालय स्तर पर हुई गतिविधियों और विभिन्न स्थानों पर आयोजित आनंद सभाओं का सजीव चित्रण करती है। यह मेरी पहली बैठक है, जिसमें जुड़कर मुझे काफी हद तक नई जानकारी मिली है। इस बैठक के माध्यम से मुझे जो अनुभव हुआ, वह अत्यंत प्रेरणादायी है। सागर संभाग में मई माह में आयोजित यूएचवी प्रशिक्षण में लगभग दो सौ शिक्षकों ने भाग लिया था। उस अनुभव को मैं विशेष रूप से याद करता हूँ। आनंद सभा की गतिविधियों से पहले मैं केवल पढ़ता था परंतु उसमें पूरी तरह सम्मलित नहीं हो पाता था। प्रशिक्षण और इन बैठकों के बाद अब मुझे यह अनुभव प्रत्यक्ष रूप से होने लगा है। यह बदलाव मेरे लिए बहुत महत्त्वपूर्ण है। संक्षेप में, मेरी पहली बैठक ने मुझे न केवल नई जानकारी दी बल्कि आत्मानुभव और अभ्यास के लिए नई प्रेरणा भी जगाई है।"

डॉ. मनीष वर्मा
संयुक्त संचालक,
लोक शिक्षण संचालनालय,
नर्मदापुरम्, म. प्र.

"शुक्रवार (26/09/2025) को होने वाली सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित 'आनंद सभा' की ऑनलाइन प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षकों की बैठक में मुझे आमंत्रित करने के लिए राज्य आनंद संस्थान को धन्यवाद प्रेषित करती हूँ। मैं काफी देर से विषयवस्तु एवं शिक्षकों के द्वारा विषय वस्तु पर पूछे जाने वाले प्रश्नों को सुन रही थी। शिक्षक साथियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों से साथ ही रिसोर्स पर्सन द्वारा दिए जाने वाले उत्तरों से विषय वस्तु की अधिक स्पष्ट होती है। व्यवस्थाओं से जुड़े प्रश्नों का जवाब देने के लिए आपके बीच हूँ पर जैसे ही हम लोग विषय-वस्तु पर ज्यादा ध्यान देते हैं व्यवस्थाओं से जुड़े प्रश्न महत्वपूर्ण नहीं रह जाते। शुक्रवार को होने वाली ऑनलाइन बैठक में जो शिक्षक उपस्थित होते हैं उन्हें दूसरे दिन शनिवार को प्रथम कालखंड में अपनी विषय वस्तु विद्यार्थियों को समझना सहज हो जाता है। शिक्षक साथियों ने जो मुख्य प्रश्न उठाया था वह यह है कि हमारे यहां कक्षा नवी और कक्षा दसवीं में सेक्शन ज्यादा है और यूएचवी प्रशिक्षण प्राप्त शिक्षक कम है।

श्रीमती संगीता ठाकुर
सहायक संचालक
(सांदीपनि प्रकोष्ठ),लोक
शिक्षण संचालनालय, भोपाल

आनंद सभा का प्रशिक्षण ग्रीष्म अवकाश में ही होते हैं। इस बार ऐसा प्रयास किया जाएगा कि जहां पर एक ही शिक्षक प्रशिक्षण प्राप्त है, वहां से दो या तीन शिक्षक प्रशिक्षण ले पायें जिससे कि विद्यालय में चार शिक्षक तो हो जाएँ। आप अपने साथियों को ग्रीष्म अवकाश में प्रशिक्षण लेने के लिए तैयार रहने को कहें। उनके नाम भी आप सभी तय कर लें, जिनके साथ आप 'आनंद सभा' का विद्यालय में सुचारू संचालन कर सकें। मैं राज्य आनंद संस्थान, एआईसीटीई एवं शिक्षा विभाग के साथियों के संयुक्त प्रयासों से नियमित चल रही आनंद सभा की ऑनलाइन बैठक के लिए हार्दिक शुभकामनाएं देती हूं।"

“सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित आनंद सभा की ऑनलाइन बैठक, जो प्रत्येक शुक्रवार को संचालित की जाती है उसमे मुझे आमंत्रित किया गया है। शाम 6:30 बजे से मैं ऑनलाइन 'आनंद सभा' बैठक में सभी शिक्षक साथियों को सुन रहा हूँ। पवनेद्र भैया जिस प्रकार से सेशन ले रहे हैं और शिक्षक साथियों के प्रश्नों के जवाब दे रहे हैं, वे मूल्यों पर आधारित है। वे हमें सकारात्मक सोच की तरफ ले जाते हैं। हमें हर स्थिति परिस्थिति में अपनी सकारात्मक सोच बनाए रखना है। जो बात मुझे सबसे ज्यादा उत्साहित करती है, वह यह है कि आज दिनांक 10/10/2025 को 364 शिक्षकों की उपस्थिति, जो अपने विद्यालयो में अध्ययन अध्यापन के कार्य करने के बाद डेढ़ घंटा अपने विकास के लिए दे रहे है, यह अद्भुत है। यही शिक्षक साथी समाज के प्रेरणा पुंज बनेंगे। व्यवस्था से जुड़े हुए प्रश्नों के जवाब देने के लिए आप सभी ने मुझे आमंत्रित किया, शिक्षक साथियों ने भी बहुत ही अच्छे प्रश्न किये जो एक सकारात्मक सोच के लिए आवश्यक है। यूएचवी रिसोर्स पर्सन, राज्य आनंद संस्थान, शिक्षक साथियों को मैं दीपावली की हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।”

श्री रंजन शर्मा
सहायक संचालक
(सांदीपनि प्रकोष्ठ),
लोक शिक्षण संचालनालय,
भोपाल

“आनंद संचारिका के ई-संस्करण के विमोचन पर अतिथि के रूप में राज्य आनंद संस्थान ने मुझे आमंत्रित किया है। इसके लिए सबसे पहले मैं टीम के प्रयासों की सराहना करना चाहती हूँ। मैं यूएचवी के सत्रों में नियमित रूप से जुड़ती हूँ, जब भी इन सत्रों की सूचना मिलती है और मेरे पास समय होता है, तो मैं इसमें भाग लेने का प्रयास करती हूँ। मैंने भी यूएचवी का सेशन अटेंड किया था और बीच-बीच में जब भी जानकारी मिलती है अवश्य आती रहती हूँ। अपने विद्यालय के सभी शिक्षकों को मैंने यूएचवी से जोड़ा है और धीरेंद्र सिंह तोमर जी की मदद लेती रहती हूँ। यह प्रक्रिया बहुत प्रभावी है। मैंने स्वयं करके देखा है। आज सुनकर फिर से प्रेरणा मिली है कि इसे पुनः शुरू करूँगी। मैं एक बार फिर कहना चाहती हूँ कि मैंने इसे जीवनशैली के रूप में अपनाना शुरू किया था, लेकिन बीच में जो छूट गया था। आज की चर्चा ने मुझे फिर से प्रेरित किया है और अब यूएचवी दोबारा अभ्यास में लाऊँगी। मेरा अनुभव यही दर्शाता है कि प्रेरणा कभी समाप्त नहीं होती, बल्कि सही अवसर और माहौल मिलने पर फिर से जग जाती है। आप सभी को आनंद संचारिका के ई-संस्करण के प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं।”

श्रीमती संगीता सक्सेना
प्राचार्य,शास. सांदीपनि उ. मा. वि. कमला नेहरू टी टी नगर,
भोपाल

“हम लोग लंबे समय से उत्तर प्रदेश में किए गए कामों की एक मासिक पत्रिका जारी करना चाहते थे, लेकिन इतने वर्षों के बाद भी हम लोग नहीं कर पाए। और मध्य प्रदेश में यह हर महीने हो पा रहा है। इसके लिए पूरी टीम और राज्य आनंद संस्थान को बहुत-बहुत बधाई। इस पत्रिका के प्रकाशन की निरंतरता से मुझे बहुत अच्छा लग रहा है, यह प्रयास पूरे देश में अनुकरणीय उदाहरण बन सकता है। संक्षेप में, मेरा संदेश यही है कि मध्य प्रदेश में इस पत्रिका का प्रकाशन सतत रूप से संभव हो रहा है, यह सभी की सामूहिक प्रतिबद्धता का प्रमाण है।”

श्री आलोक पांडे
रिसोर्स पर्सन, एआईसीटीई

"आप सभी को नमस्ते, मैंने अभी दो-तीन फीडबैक सुने जिसमें एक बच्चे का भी फीडबैक था। बहुत अच्छा, सकारात्मक रिस्पांस आ रहा है। सबसे पहले मैं पूरी टीम को बधाई देता हूँ। आनंद संचारिका जैसी पत्रिका तैयार करना कितना बड़ा कार्य है, यह मैं भली-भाँति समझता हूँ। एक पत्रिका को बनाने में कई बार दो-दो, तीन-तीन साल लग जाते हैं लेकिन यहाँ पर हर महीने यह पत्रिका आ रही है। इसका श्रेय पूरी टीम के सामूहिक प्रयास को जाता है। आज के समय में सबसे कीमती चीज़ 'समय' है और जब शिक्षक एवं सहयोगी अपना मूल्यवान समय इस कार्य में दे रहे हैं, तो यह अपने आप में बहुत सकारात्मक संकेत है। आज की तारीख में समय किसी के पास नहीं है -बेटा अपने पिता के लिए समय नहीं निकाल पाता, भाई अपने भाई के लिए समय नहीं निकाल पाता। लेकिन इसके बावजूद अगर सब मिलकर अपना समय दे पा रहे हैं, तो यह दर्शाता है कि उनमें कहीं न कहीं सकारात्मक परिवर्तन हुआ है। मैं इस प्रयास को समाज के लिए भी एक संदेश के रूप में देखता हूँ। समाज में इस समय अनेक प्रकार की घटनाएँ हो रही हैं। ऐसे में आनंद संचार का यह कार्य समाज में सकारात्मकता लाने का साधन बन सकता है। यह बहुत बड़ा काम है। अंत में, मैं पूरी टीम को पुनः बधाई देता हूँ और उनके परिश्रम की सराहना करता हूँ।"

शंकर कुमार खत्री
प्रभारी यूएचवी असेसमेंट सेल
लोक शिक्षण संचालनालय,
भोपाल

"शास.सांदीपनि उ.मा.वि. बैरसिया शिक्षा के क्षेत्र में निरंतर प्रगति प्राप्त कर भोपाल जिले में अग्रणी पंक्ति में शामिल हो रहा है। वर्तमान में 1375 नामांकन के साथ हमारे विद्यार्थी भविष्य की दिशा निर्धारित करेंगे। इसलिए हमारा पहला प्रयास है कि श्रेष्ठतर भविष्य को सुरक्षित करने हेतु आज ही बेहतर कल का निर्माण करने की दिशा में अथक प्रयास करना है। हमारा दृढ़ संकल्प है कि बेहतर परिणाम (अंक प्रणाली से अलग) की दिशा में बेहतर नागरिक तैयार करने हेतु हमें नैतिक मूल्यों को विकसित करना है। लाइफ स्किल और सार्वभौमिक मूल्यों को छात्रों की आदत में जोड़ना है। इसके लिए पहले हमें सीखना होगा, बेहतर बनकर रोल मॉडल बनना है। कुछ ऐसा कर भी रहे है, कुछ को अभी करना शेष भी है। हाँ, जल्दी है क्योंकि हम 22वीं सदी की ओर तेजी से जा रहे हैं। दुनिया बदल रही है। ए.आई./रोबोट मानव का स्थान ले रहे हैं। बेहतर हो कि हम अपना स्थान उनसे अधिक ज्ञानवान बनकर करें। सार्वभौमिक मानवीय मूल्य ही बेहतर देश का निर्माण कर सकते हैं। राज्य आनंद संस्थान अंतर्गत संचालित 'आनंद सभा' बेहतर दुनिया निर्माण की दिशा में उत्कृष्ट कार्य हेतु सभी के लिए बेहतर संस्थान है। खुशहाली के इंडेक्स में भारत को शीर्ष पंक्ति में लाना हर समाज में रहने वाले व्यक्ति का कर्तव्य होना चाहिए।"

डॉ. हरिनारायण मिश्रा
प्राचार्य,
शास. सांदीपनि उ. मा. वि.
बैरसिया, भोपाल

विशेष आलेख - अध्ययन एवं अभ्यास

आनंद संचारिका के गत माह के अंक में हमने सेल्फ डेवलपमेंट (चेतना के विकास) के संदर्भ में चर्चा करते हुए यह प्रयास किया था कि हम अपनी **कल्पनाशीलता पर ध्यान दें** और यह देखें कि हमारी कल्पनाशीलता **सहज स्वीकृति** — अर्थात् संबंध, व्यवस्था और सह-अस्तित्व — के अनुरूप है या नहीं।

यदि नहीं, तो हमें संबंध, व्यवस्था और सह-अस्तित्व को समझते हुए अपनी कल्पनाशीलता को इनके अनुरूप करने का अभ्यास करना होगा।

यही अभ्यास हमें भीतर से स्पष्टता और संतुलन प्रदान करता है।

जब हम संबंध, व्यवस्था और सह-अस्तित्व को गहराई से समझते हैं, तब यह बोध होता है कि—

- **अस्तित्व एक व्यवस्था है।**
- **व्यवस्था को समझना आवश्यक है।**
- **स्वयं में व्यवस्थित होकर व्यवस्था में भागीदारी करना ही स्वयं में विकास है।**

इस प्रयास में जैसे-जैसे हमारा सेल्फ डेवलपमेंट होता है, हम स्वयं में सहज होते हैं, आराम में आते हैं, सुखी होते हैं और धीरे-धीरे निरंतर सुखी होने की ओर बढ़ते हैं।

अब आइए, **सुख** को और विस्तार से समझते हैं।

स्वयं में सुख को ठीक प्रकार से समझने के लिए अपने आप से जुड़े हुए इन दो प्रश्नों को पूछते हैं—

- जैसा मैं हूँ।
- जैसा होना मुझे सहज स्वीकार्य है।

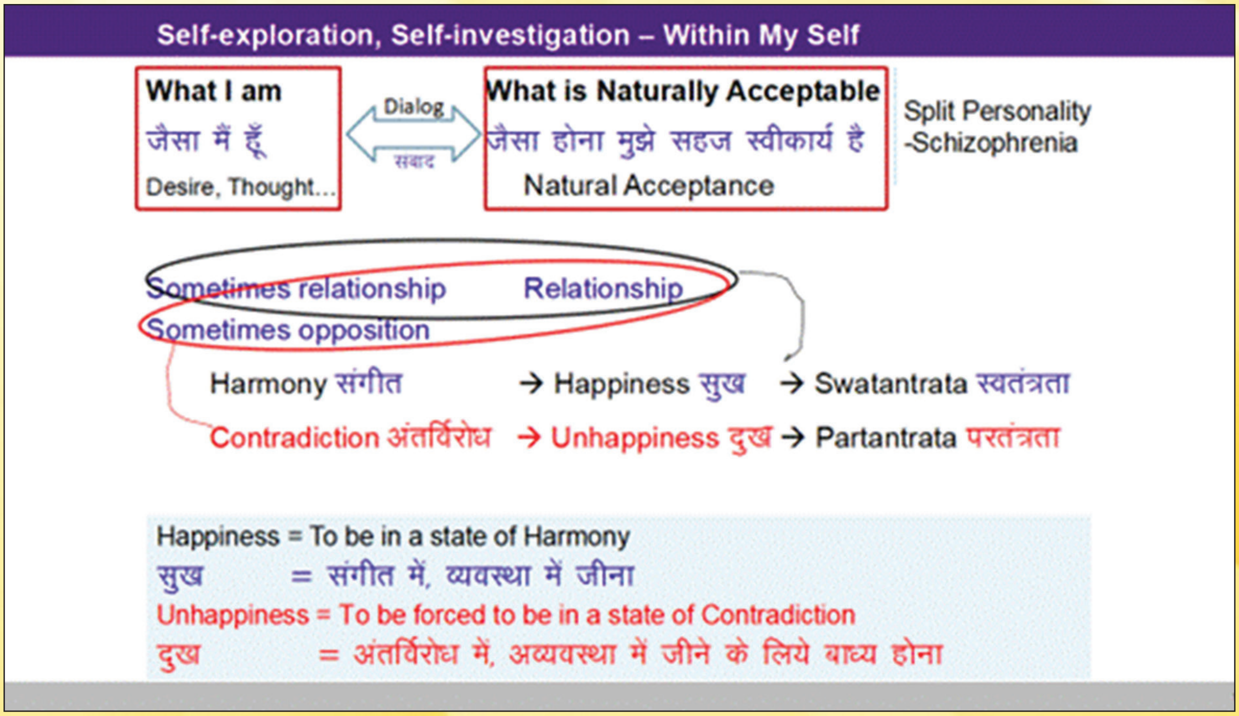

जब आप इन दोनों वास्तविकताओं को देखते हैं, तो आप यह जान पाते हैं कि क्या ये दोनों एक जैसी हैं या अलग-अलग।

क्या इन दोनों में **संगीत (harmony) है या अंतर्विरोध**?

यही स्वयं के साथ संवाद है।

आप यह अवश्य पूछ सकते हैं कि यह महत्वपूर्ण क्यों है।

सुख	दुःख
मैं जिस भी स्थिति- परिस्थिति में जीता हूँ,	मैं जिस भी स्थिति- परिस्थिति में जीता हूँ,
अगर उसमें संगीत है, व्यवस्था है,	अगर उसमें अंतर्विरोध है, अव्यवस्था है ,
तो ऐसा जीना मुझे सहज स्वीकार्य होता हैं ।	तो ऐसा जीना मुझे सहज स्वीकार्य नहीं होता हैं।
इस स्वीकृति के भाव में होना सुख है।	इस अस्वीकृति के भाव में जीने के लिए बाध्य होना दुःख हैं।
संगीत में, व्यवस्था में होना सुख है।	अंतर्विरोध में, अव्यवस्था में जीने के लिए बाध्य होना दुःख है।

इसे समझने के लिए एक उदाहरण लेते हैं—

माना कि आप किसी से बदला लेने के बारे में सोच रहे हैं।

दो घंटे तक आप यह सोचते हैं कि बदला कैसे लिया जाए और फिर अंत में उस विचार को त्याग देते हैं।

अब सोचिए—इन दो घंटों के दौरान क्या आप स्वयं में सहज थे या असहज?

जब भी हम कुछ ऐसा सोचते या करते हैं जो हमें सहज स्वीकार्य नहीं होता, तो हमारे भीतर **अंतर्विरोध की स्थिति** उत्पन्न हो जाती है।

इसके लिए हमें कोई अलग क्रिया करने की आवश्यकता नहीं होती—सिर्फ ऐसा कुछ सोचने मात्र से ही जो हमें सहज स्वीकार्य नहीं है, हमारे अंदर असहजता उत्पन्न हो जाती है। इसमें हम यह देख पाते हैं कि हम असहज थे क्योंकि "जैसा मैं हूँ" और "जैसा होना मुझे सहज स्वीकार्य है" — इन दोनों में एकरूपता नहीं थी।

स्वयं में अंतर्विरोध की यह स्थिति ही दुःख है।

अब देखते हैं कि जब आप स्वयं में **संगीत (harmony)** में होते हैं तो क्या होता है—

जैसे कि आपके भीतर संबंध का भाव है और आप संबंध के विषय में सोच रहे हैं।

चूँकि आपकी सहज स्वीकृति संबंध के लिए है, इसलिए आप स्वयं में संगीत की स्थिति में होते हैं।

अर्थात् "जैसा आप हैं" और "जैसा होना आपको सहज स्वीकार्य है" — इन दोनों में एकरूपता होती है।

इस प्रकार जब आप स्वयं में संगीत की स्थिति में होते हैं, तो आप स्वयं में सहज महसूस करते हैं।

स्वयं में संगीत की यह स्थिति ही सुख है।

जब हम अपनी कल्पनाशीलता पर ध्यान देते हैं, तो यह देख पाते हैं कि हमारी कल्पनाशीलता — अपने बारे में, परिवार के बारे में, समाज के बारे में या प्रकृति और अस्तित्व के बारे में — निरंतर चलती रहती है।

इन सभी के संदर्भ में हमारी **सहज स्वीकृति क्या है**, इसे हम स्वयं में देख पाएं और अपनी कल्पनाशीलता को उसी अर्थ में सुनिश्चित कर पाएं — **यही हमारे निरंतर सुख का आधार बनता है**।

सुख	निरंतर सुख
मैं जिस स्थिति/परस्थिति में जीता हूँ, अगर उसमें संगीत है/व्यवस्था है, तो ऐसा जीना मुझे सहज स्वीकार होता है। इस स्वीकृति के भाव में जीना सुख है। संगीत में/व्यवस्था में जीना ↓ सुख है। सुख = व्यवस्था ↓	जीने का फैलाव 1. व्यक्ति के स्तर पर 2. परिवार के स्तर पर 3. समाज के स्तर पर 4. प्रकृति/अस्तित्व के स्तर पर **निरंतर सुख=इन सभी स्तर पर व्यवस्था को समझना एवं व्यवस्था में जीना** 1. स्वयं में व्यवस्था 2. परिवार में व्यवस्था 3. समाज में व्यवस्था 4. प्रकृति/अस्तित्व में व्यवस्था

1. उपरोक्त सभी बिंदुओं पर निरंतर **अध्ययन और अभ्यास** जारी रखने के लिए आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। **अगले अंक में हम इस चर्चा को और गहराई से आगे बढ़ाएँगे।**

प्रतिभागियों के स्वमूल्यांकन

"मेरी यात्रा की शुरुआत यूएचवी की परिचय कार्यशाला के रूप में हुई थी, जहाँ मुझे यूएचवी कंटेंट सूचना के रूप में प्राप्त हुआ। लेकिन मेरी यात्रा को गति तब मिली जब मैंने इस कंटेंट को गहराई से समझना शुरू किया। तब में यह देख पायी कि सुख की निरंतरता पर बार-बार ध्यान जाने लगा है और जीने में सजगता भी बढ़ रही है। सही समझ के साथ चारों व्यवस्थाओं में जीने के लिए 'सहज स्वीकृति' के बारे में मेरी समझ विकसित हुई है। सहज स्वीकृति पर बार-बार ध्यान जाने से व्यवस्था में जीने के लिए अधिक से अधिक प्रयास बना रहता है। पहले तो व्यवहार पर ध्यान ही नहीं जाता था, कुछ भी हो जाता था, बेहोशी का एक माहौल था, यह तक ध्यान नहीं रहता था कि हम क्या कर रहे हैं, कैसे बात कर रहे हैं। लेकिन अब सजगता बढ़ी है, व्यवहार पर भी ध्यान जाने लगा है। इससे जीवन में एक प्रकार की स्पष्टता और सहजता आयी है।"

मीनाक्षी बाजपेयी, *शास. सांदीपनि अहिल्याश्रम, इंदौर*

"मेरा परिचय मानव मूल्य (यूएचवी) की अवधारणा से वर्ष 2023 में वाल्मी में आयोजित कार्यशाला के माध्यम से हुआ। इस कार्यशाला में मैंने आदरणीय भानु भैया से इस अवधारणा को सर्वप्रथम समझा और जाना। जब मैं वहाँ गई थी तो एक प्रकार की जिज्ञासा और अलग ही भाव-विचार लेकर पहुँची थी, लेकिन लौटते समय अपने भीतर बहुत बड़ा परिवर्तन महसूस किया। कार्यशाला के बाद मैंने पाया कि मेरी मानसिकता और विचारों की दिशा काफी बदल गई थी। पहले की तुलना में मुझे अधिक स्पष्टता, शांति और आत्म-संतोष का अनुभव हुआ। वहाँ से लौटते ही मुझे लगा कि मैं पहले से कहीं अधिक सुलझी हुई और शांत हो गई हूँ। समय के साथ यह केवल अनुभव भर नहीं रहा, बल्कि मेरी आदत और प्रवृत्ति का हिस्सा बन गया। मानव मूल्य की शिक्षा ने मुझे जीवन की वास्तविक श्रेष्ठता का बोध कराया। पहले मैं सोचती थी कि श्रेष्ठता का अर्थ केवल प्रमाणित उपलब्धियों से है लेकिन यूएचवी ने मुझे यह समझाया कि असली श्रेष्ठता आचरण और जीवन दृष्टि में है। इस प्रकार कार्यशाला ने मेरे भीतर गहरे मानसिक और वैचारिक बदलाव लाए हैं, जिन्हें मैं आज अपने दैनिक जीवन और शिक्षण कार्य में आत्मसात कर रही हूँ।"

ऋतुराज गोस्वामी, *शास. सांदीपनि उ.मा. वि. मझौली, जबलपुर*

"यूएचवी के कार्यक्रमों से मेरा जुड़ना 2019 में हुआ तब से समय-समय पर अलग-अलग कार्यशालाओं और भागीदारियों के माध्यम से इसके प्रस्तावों पर गहरायी से ध्यान देने का अवसर मिला है। इन प्रस्तावों को अपने जीने में अभ्यास करने का भी प्रयास करता रहता हूँ विशेष रूप से 'मैं' की आवश्यकताओं पर बार-बार ध्यान जाता है और इस क्रम में समझ, सम्बन्ध और सुविधा के ठीक क्रम के आधार पर आव्श्यक्ताओं की पूर्ति का प्रयास रहता है। इस कार्यक्रम का सबसे बड़ा प्रभाव मैं अपनी कल्पनाशीलता पर ध्यान के रूप में देख पता हूँ, पहले कोई भी परिस्थिति का प्रभाव मुझ पर बहुत देर तक रहता था और उससे बाहर आने का कोई तय कार्यक्रम भी नहीं था पर अब यूएचवी के प्रस्तावों के रूप में सहज स्वीकृति के आधार पर जीने का कार्यक्रम तय कर पाता हूँ। इससे मेरी जीने से जुड़ी बहुत सी मान्यताओं में परिवर्तन हुआ है और जीवन के प्रति दृष्टि भी बदली है। आगे जीना और अधिक सहज हो पाए और चारो स्तर पर व्यवस्था एवं संगीत को पहचान कर जीना हो ऐसी आशा बनती है।"

चेतन स्वरूप, *यूएचवी वोलिन्टियर IIT कानपुर, उत्तर प्रदेश*

"मेरी यूएचवी यात्रा 10 से 15 जून 2024 तक वाल्मी सत्र से शुरू हुई, जहाँ भानू भैया और दिलशाद भैया हमारे मार्गदर्शक थे। पहले मुझे आनंद, आत्मा और शरीर के भेद की समझ नहीं थी। सत्र में "मानें नहीं, जांचो और अन्वेषण करो" के माध्यम से समझ आया कि सही समझ, सही संबंध और सही सुविधा ही निरंतर सुख का आधार हैं। मैंने जाना कि सुख आत्मा का विषय है और निरंतर सुख के लिए व्यवस्था में रहना आवश्यक है। अब मैं स्वयं पर कार्य कर रहा हूँ, सही प्रयासों पर ध्यान दे रहा हूँ और अपने छात्रों को भी इस दिशा में प्रेरित करने का प्रयास कर रहा हूँ।"

सोमनाथ पटेल, *शास. सान्दीपनि उ. मा. वि. करेली, नरसिंहपुर*

"मैंने 23 से 29 अप्रैल 2023 तक हुए 6 दिवसीय यूएचवी कार्यशाला में भाग लिया, उसमे मुझे समझ आया कि सही समझ और संबंधों के निर्वाह के साथ आवश्यकता से थोड़ी अधिक सुविधा ही निरंतर सुख का आधार है। प्रारंभ में इसे व्यवहार में लाना कठिन लगा, पर पुनः भानु भैया के मार्गदर्शन में रिफ्रेशर सत्र से सही समझ की दिशा में प्रगति हुई। अब मैं अपनी आवश्यकता, संबंध और आचरण को बेहतर समझ रहा हूँ। साप्ताहिक बैठकों से निरंतर सीख मिलती है, जिससे परिवार और कार्यस्थल दोनों में स्थिरता और आनंद की अनुभूति बनी हुई है।"

मनीष कुमार सोनी, *शास. सांदीपनि उ. मा. वि. , डिंडौरी*

"यूएचवी से जुड़ने के बाद से मैं हर समय अपनी कल्पनाशीलता को देखने की कोशिश करता हूं। मैंने समझा कि दूसरा मेरे जैसा है। ऐसा जानने के बाद मैं सभी के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करता हूं। अब मुझमें कृतज्ञता का भाव रहता है| मैंने पोलीथीन का उपयोग लगभग बंद कर दिया है। मैं कभी-कभी साइकिल का उपयोग भी करता हूं ताकि मेरी ओर से कार्बन उत्सर्जन कम हो।"

सुनील कुमार पाटीदार, *मंदसौर*

"मैं अपना स्वमूल्यांकन करू तो वर्कशॉप करने से पहले, मैं सुविधा संग्रह में लगा रहता था। जब मैंने अपनी कल्पनाशीलता में देखा तो पाया कि शरीर की आवश्यकता तो सीमित है जबकि मैं की आवश्यकता निरंतर है जो कि उभय सुख है, जो हमें सही भाव से प्राप्त होगा उस पर कोई कार्यक्रम नहीं है। अब मैं यह जान पाया हूं कि यह जो चल रहा है वह मेरी सहज स्वीकृति के आधार पर नहीं है, हम मान्यता और संवेदनाओं के आधार पर जी रहे हैं। मैं अपने सुख-दुख के कारण को पहचान पा रहा हूं। मुझे स्वयं को व्यवस्थित करना पड़ेगा। "

भगवत सिंह जांगड़े, *जिला योग प्रभारी, राजगढ़*

"यूएचवी में जुड़ने के बाद से कल्पनाशीलता पर ध्यान जाने लगा है। पहले मुझे क्या करना है और कैसे करना है, दोनों में फर्क नहीं जानता था किंतु अब दोनों में फर्क साफ नजर आता है। पहले छोटी-छोटी बातों पर विरोध का भाव आ जाता था, अब स्वयं में परिवर्तन को देखता हूं। स्कूल में बच्चों के साथ चर्चा करते हैं तो बच्चे भी इस विषय को पसंद करने लगे हैं। मेरे घर में अब मेरी धर्मपत्नी भी इस विषय को पसंद करने लगी है। वह भी शुक्रवार को होने वाली चर्चा से स्वत: ही जुड़ जाती है और याद रखती है कि शुक्रवार को होने वाली चर्चा में जुड़ना है। कुल मिलाकर देखा जाए तो अब इस विषय के माध्यम से स्वयं के विश्लेषण पर ध्यान जाने लगा है।"

कमल सिंह मालवीय, *शास. सांदीपनि उ. मा. वि. बुधनी, सीहोर*

मैंने 28 मई से 02 जून 2025 को यूएचवी की पहली वर्कशॉप अटेंड की थी। जीवन में इसके महत्व को देख कर अगले ही वर्कशॉप में मैंने वालंटियर के रूप में कार्य करने का मन बनाया, जिससे इसे और बेहतर ढंग से समझ सकूँ। पहले स्वयं को देखना ठीक से हो नहीं पा रहा था पर यूएचवी ने एक दृष्टि दी है जिससे मैं अपने जीने को देख पा रहा हूँ। प्रभाव से स्वभाव की ओर मेरा जीना हो रहा है। पहले जीवन सुविधा केंद्रित था किन्तु अब ध्यान समझ और संबंधों पर भी जाने लगा है। इससे मेरी दिनचर्या में सुधार एवं पारिवारिक समस्याओं का समाधान मिला है।"

जीतेंद्र कुरेरिया, *शास. हाई स्कूल, घरभारा, सीधी*

मेरी यूएचवी यात्रा...

सार्वभौमिक मानवीय मूल्य पर सबसे पहली कार्यशाला मैंने जून 2023 में विभागीय आदेश के तहत ली थी। इस कार्यशाला से मुझमें मानव के मूल लक्ष्य की स्पष्टता बनी और सहज-स्वीकृति के आधार पर विभिन्न प्रस्तावों की जाँच परख मैंने प्रारम्भ की। प्रति शुक्रवार को होने वाली ऑनलाइन मीटिंग से मुझमें विषयवस्तु को लेकर और अधिक स्पष्टता बनी। मैंने इसके प्रस्तावों को धीरे धीरे जीवन में लाने का प्रयास किया, साथ ही विद्यालय में आनंद सभा की कक्षाओं के माध्यम से बच्चों तक भी इन प्रस्तावों को पहुँचाने का प्रयास किया। इससे मुझमें तनाव की कमी आई, वैचारिक सजगता बढ़ी , विद्यालय के कार्यों के प्रति जिम्मेदारी के भाव में भी वृद्धि हुई और परिवार तथा विद्यालय में मेरे व्यवहार में भी कुछ निश्चितता आई।

अक्टूबर 2024 में जब रिफ्रेशर वर्कशॉप की, उसके बाद मुझे व्यवस्था के चारों स्तरों पर मेरी भागीदारी की स्पष्टता बनी। स्वयं से लेकर परिवार, विद्यालय, समाज और प्रकृति की व्यवस्था में मेरी क्या भागीदारी हो सकती है; इस ओर ध्यान जाने लगा और अपनी भागीदारी एवं योग्यता को बढ़ाने के लिए मैंने मंगलवार और बुधवार की मीटिंग में भी भाग लेना शुरू किया। यूएचवी टीम और आनंद विभाग के सहयोग से मुझे ग्रीष्मकाल में होने वाली कार्यशालाओं में अपनी भागीदारी करने और विषयवस्तु को रखने का मौका प्राप्त हुआ। यूएचवी टीम के सहयोग और प्रोत्साहन से ही मेरी भागीदारी यूएचवी के अन्य कार्यक्रमों में भी हो पाई।

जून 2025 में लेवल 3 वर्कशॉप और अगस्त 2025 में हुई समीक्षा बैठक से मुझे श्री भानु भैया द्वारा भागीदारी के कुछ और अवसर प्रस्तावित किए गए जिन पर आगे बढ़ने का मैंने प्रयास किया। इसी के परिणामस्वरूप हाल ही में 12 सांदीपनि विद्यालयों के कुछ चिन्हित विद्यार्थियों के साथ एक पायलट प्रोजेक्ट में भी अपनी सहभागिता करने का अवसर प्राप्त

मैं आने वाले समय में विद्यार्थियों के लिए विद्यालय, ब्लॉक, जिला और राज्य स्तर पर यूएचवी टीम और आनंद संस्थान द्वारा आयोजित होने वाले कार्यक्रमों में सहभागिता करने को तत्पर हूँ। संभागीय टीम के सहयोग से अपने संभाग में यूएचवी के कार्यक्रमों को और गति देने का मेरा प्रयास रहेगा। मेरा प्रयास रहेगा कि इस विषय-वस्तु को प्रत्येक विद्यालय से लेकर सम्पूर्ण समाज तक पहुँचाने में सहयोगी हो पाऊँ, जिससे विद्यार्थियों में मूल्य विकास हो पाए, तनावमुक्त वातावरण बन सके, समाज में अभय, शांति, समृद्धि बढ़े। मेरे उत्थान में निरन्तर प्रयासरत सभी सहयोगीजनों को हृदय से आभार ।

योगिता रावत

उच्च माध्यमिक शिक्षक (जीव विज्ञान)

शास. सांदीपनि उ. मा. वि. नरवर, शिवपुरी

आरएएस-यूएचवी के कार्यक्रम व झलकियाँ

क्र.	दिनाँक	कार्यक्रम	कार्यक्रम स्थल
1	20 सितम्बर 2025	पोटेंशियल पर्सन डेवलपमेंट कार्यक्रम	राज्य आनंद संस्थान, भोपाल
2	22 से 26 सितम्बर 2025	आनंद की ओर UHV-II पांच दिवसीय कार्यशाला	RCVP नरोन्हा प्रशासन अकादमी, भोपाल
3	06 से 11 अक्टूबर 2025	फैकल्टी डेवलपमेंट UHV-II पांच दिवसीय कार्यशाला (उच्च शिक्षा)	सेंट्रल पुलिस अकादमी (CAPT) कोकता, भोपाल
4	06 से 11 अक्टूबर 2025	स्कूल के छात्रों के साथ ऑनलाइन कार्यशाला	आरएएस-यूएचवी टीम द्वारा ऑनलाइन प्रशिक्षण
5	12 अक्टूबर 2025	स्नेह संचार सभा	भोपाल, जबलपुर, रीवा, सागर संभागों में

कार्यशाला का नाम : पोटेंशियल पर्सन डेवलपमेंट कार्यक्रम

दिनांक : 20 सितम्बर 2025

स्थान : राज्य आनंद संस्थान, भोपाल

पोटेंशियल पर्सन डेवलेपमेंट कार्यक्रम के अंतर्गत 20 सितम्बर 2025, रविवार को राज्य आनंद संस्थान में अनेक लोगों ने प्रतिभागिता की। इसमें भोपाल से मोहित श्रीवास्तव, दिलशाद हुसैन, श्रद्धा गुप्ता, आशा अहिरवार, अभिषेक शर्मा एवं राजगढ़ से भागवत सिंह जांगड़े शामिल हुए। श्रद्धा गुप्ता, भागवत जांगडे और आशा अहिरवार ने "प्रकृति में व्यवस्था" पर अपनी-अपनी प्रस्तुति रखी और अपना स्वमूल्यांकन भी रखा। श्री मोहित श्रीवास्तव ने प्रस्तुतिकरण संबंधी बारीकियों पर सभी से चर्चा करके मार्गदर्शन प्रदान कियाकिया। प्रस्तुतिकरण करते समय प्रतिभागियों का ध्यान विषय-वस्तु को गहराई से समझने और उसी क्रम में जीने की तरफ गया, साथ ही सभी ने स्वयं में इस कार्य को करने प्रति गहरी निष्ठा जताई।

कार्यशाला का नाम : **आनंद की ओर (UHV-II पांच दिवसीय कार्यशाला)**

दिनांक : **22 से 26 सितम्बर 2025 तक**

स्थान : **RCVP नरोन्हा प्रशासन अकादमी, भोपाल**

राज्य आनंद संस्थान की ओर से 22 से 26 सितम्बर 2025 तक सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित 'आनंद की ओर'UHV-II पांच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन RCVP नरोन्हा प्रशासन अकादमी भोपाल में किया गया। इसमें कुल 28 प्रतिभागियों ने सहभागिता की। इस कार्यशाला में उन्हीं लोगों को सहभागिता करने का अवसर मिला, जिन्होंने पहले तीन दिवसीय आनंद की ओर कार्यशाला कर ली थी। प्रतिभागियों का ध्यान मानव में व्यवस्था के अंतर्गत स्वयं और शरीर के सह-अस्तित्त्व पर, परिवार में स्थापित नौ मूल्यों पर, समाज में व्यवस्था के अंतर्गत शिक्षा संस्कार की भूमिका पर एवं प्रकृति और अस्तित्त्व व्यवस्था पर गया।

कार्यशाला का नाम : फैकल्टी डेवलपमेंट कार्यशाला (उच्च शिक्षा)

दिनांक : 06 से 11 अक्टूबर 2025 तक

स्थान : सेंट्रल पुलिस अकादमी (CAPT), कोकता, भोपाल

राज्य आनंद संस्थान की ओर से दिनाँक 06 से 11 अक्टूबर 2025 तक सेंट्रल पुलिस अकादमी (CAPT) कोकता, भोपाल में सार्वभौमिक मानवीय मूल्य आधारित छः दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें पूरे प्रदेश के पी.एम.श्री महाविद्यालयों एवं उत्कृष्ट महाविद्यालयों से कुल 61 प्राध्यापकों ने सहभागिता की और चारों स्तर की व्यवस्थाओं को समझने का प्रयास किया। वर्तमान परिवेश में मूल्य शिक्षा के माध्यम से शिक्षा संस्कार विकसित करने पर बल दिया गया। यह कार्यशाला शिक्षकों के लिए आत्म-अवलोकन, संवाद और मानवीय मूल्य के विकास की एक सार्थक प्रक्रिया है। राज्य आनंद संस्थान, यूएचवी फाउंडेशन एवं उच्च शिक्षा विभाग का यह संयुक्त प्रयास NEP 2020 के मानवीय लक्ष्य को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

कार्यशाला का नाम : **ऑनलाइन विद्यार्थी कार्यशाला**

दिनांक : **06 से 11 अक्टूबर 2025 तक**

स्थान : **आरएएस-यूएचवी टीम द्वारा ऑनलाइन प्रशिक्षण**

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के दिशानिर्देशों के तहत शिक्षा में मानवीय मूल्यों के समावेश हेतु राज्य आनंद संस्थान और यूएचवी फाउंडेशन के सहयोग से 6 से 11 अक्टूबर 2025 तक सांदीपनि विद्यालयों में कक्षा 9वीं से 12वीं मे अध्ययनरत विद्यार्थियों हेतु पायलट प्रोजेक्ट के रूप में 6-दिवसीय ऑनलाइन कार्यशाला सायं 6:00 से 8:15 बजे तक आयोजित की गई। लगभग 167 पंजीकृत छात्रों में से 55 ने नियमित सक्रिय प्रतिभागिता की। विद्यार्थी निर्बाध रूप से कार्यशाला-वेबिनार में जुड़ सकें इसके लिए उन्हें एक दिन पूर्व मोबाईल तकनीकी प्रशिक्षण दिया गया; साथ ही प्रश्नोत्तर सत्र के लिये अतिरिक्त आधा घंटा समय भी निर्धारित हुआ।

सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से संबंधित विभिन्न प्रस्तावों के माध्यम से प्रतिभागी-विद्यार्थियों में सहज-स्वीकृति आधारित जांच-परख की प्रक्रिया द्वारा सही-समझ, संबंधों में भावों की पहचान व निर्वाह तथा परिवार, समाज व प्रकृति के प्रति यथा योग्य जिम्मेदारी और भागीदारी की भावना विकसित करना, इसके कुछ प्रमुख लक्ष्य रहे। संवाद, अभ्यास और गृहकार्य से विद्यार्थियों ने स्व-अन्वेषण द्वारा जीने से जुड़े मूलभूत प्रश्नों का सत्यापन किया।

यह कार्यशाला इस अर्थ में भी महत्वपूर्ण रही कि इसकी योजना-निर्माण व रूपरेखा बनाने से लेकर उसके सुचारू क्रियान्वयन एवं सफल समापन तक, प्रत्येक कार्य म. प्र. के विद्यालयीन शिक्षकों ने ही मिलकर पूरा किया। कार्यशाला की उपलब्धि के रूप में बच्चों के गहन प्रश्न एवं उनके व्यक्तिगत व पारिवारिक अनुभव रहे। आपसी संवाद, अभ्यास एवं गृहकार्य द्वारा विद्यार्थियों ने प्रस्तावों का स्व-अन्वेषण और प्रयोगात्मक सत्यापन भी किया गया जिसके अन्तर्गत शिक्षकों एवं विद्यार्थियों की मूल्य शिक्षा के प्रति स्वीकार्यता बढ़ी, जो विद्यालय में मूल्य आधारित शिक्षा के द्वारा स्थायी परिवर्तन की दिशा है। इस प्रकार, यह कार्याशाला सही-समझ के विकास, परिवार में संबंधों का भावपूर्ण निर्वाह एवं समाज व प्रकृति के प्रति जिम्मेदारी का भाव के विकास की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुई और भविष्य में इसके व्यापक विस्तार की प्रबल संभावना दिखाई देती है।

मुख्य प्रबोधक	मॉडरेटर	अन्तराल संवाद	क्लोजिंग रिमार्क/FAQ	अतिथि
योगिता रावत जी, डॉ. रचना श्रीवास्तव जी,	पूजा चौहान जी	नवीन शर्मा जी	अलका परिहार जी	श्री बलवीर बुंदेला जी
डॉ. रचना श्रीवास्तव जी, श्रीमती अर्चना सिंह जी	रितुराज गोस्वामी जी	रामायण जी	रमेश नापित जी	श्रीमती वंदना मिश्रा जी
डॉ. रचना श्रीवास्तव जी, मनीषा खरे जी, योगिता रावत जी	मीनाक्षी वाजपेयी जी	प्रीतेश जी	अनिल पटेल जी	श्री रमेश कुमार सेन जी
अर्चना सिंह जी, योगिता रावत जी , डॉ. रचना श्रीवास्तव जी, सुनीता जी	अंजू जी	कुमकुम जी	विजयलक्ष्मी जी	सुश्री दीप्ति ठाकुर जी
महर्षि माथुर जी, अजय बाजपेयी जी	अखिलेश जी	परवीन जी	जीतेन्द्र मालवीय जी	श्री आर.पी. कुर्मी जी
अमित त्रिपाठी जी, योगिता रावत जी पूजा चिऊहन जी, कुमकुम जी	पूनम सिंह जी	बलवीर जी	चतुर्भुज कोरी जी	श्री सत्य प्रकाश आर्य जी

ऑनलाइन कार्यशाला के विभिन्न सत्रों के दौरान छात्रों द्वारा पूछे गए कुछ प्रश्नों की झलकियाँ-

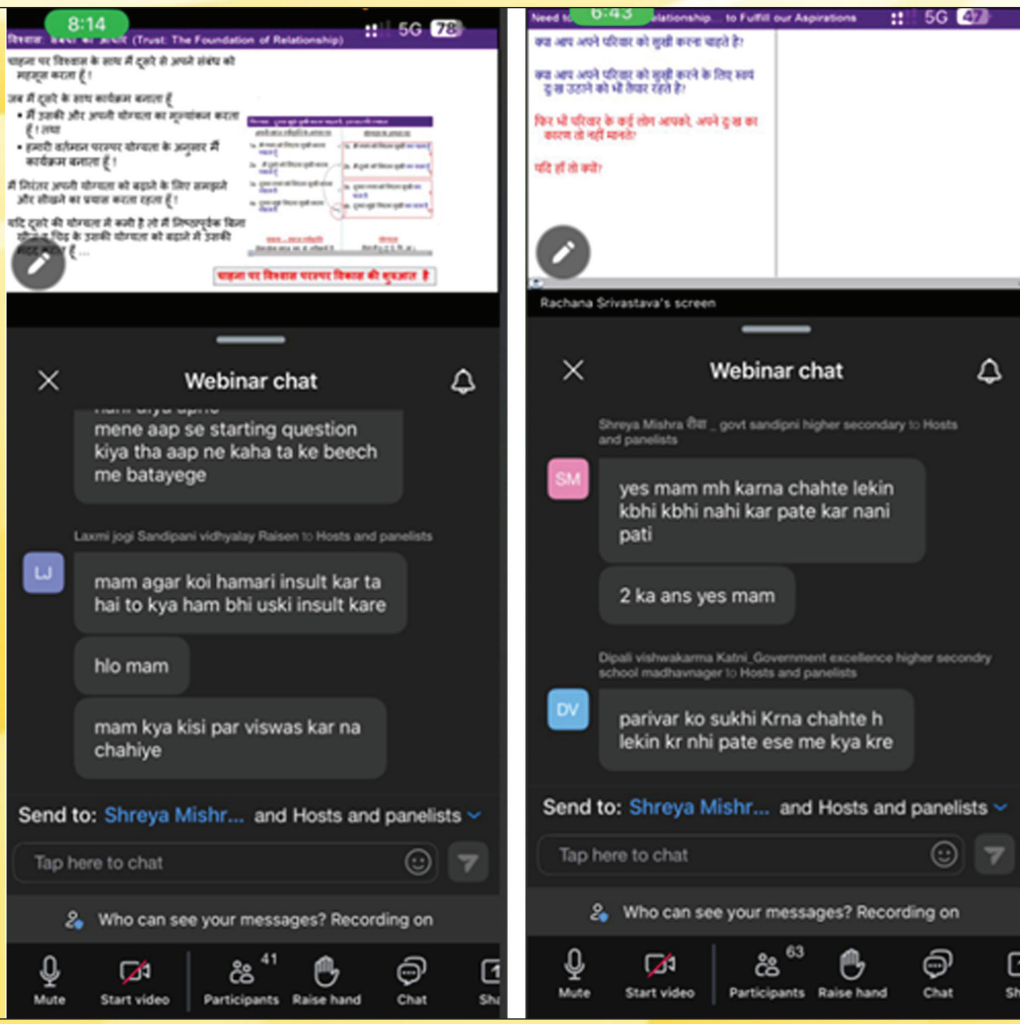

कार्यक्रम का नाम : स्नेह संचार सभा

दिनांक : 12 अक्टूबर 2025

स्थान : भोपाल, जबलपुर, रीवा, सागर संभागों में

म.प्र. के चार संभागों के चिन्हित स्थलों पर, यूएचवी के सभी निष्ठावान एवं सक्रिय सदस्यों स्नेहिल मेल-मिलाप , उनके परिवार के सदस्यों में आत्मीयता बढ़ाने, संभाग-जिला-विद्यालय स्तर पर यूएचवी की विभिन्न गतिविधियों के लिए संभाव्य धरातल निर्मित करने जैसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों के साथ 'स्नेह-संचार सभा' का आयोजन दिनांक 12 अक्टूबर 2025 को किया गया। इसका विवरण निम्न प्रकार है -

स्नेह संचार सभा- 12 अक्टूबर 2025 (रविवार)

क्र	संभाग	स्थान	समय (दोपहर)	सदस्य संख्या	राज्य आनंद संस्थान के प्रतिनिधि	अगली मीटिंग की तिथि
1	भोपाल	राज्य आनंद संस्थान, भोपाल	12:00 से 4:00	17	अखिलेश अर्गल जी	16 नवंबर जिला स्तर,14 दिसंबर संभाग स्तर
2	रीवा	शा. उत्कृष्ट उ. मा. वि., वेंकट क्रमांक-1 सतना	12:00 से 4:00	31	भानु प्रताप जी मोहित श्रीवास्तव जी	23 नवंबर
3	जबलपुर	शा. उ. मा. वि ब्यौहारबाग, जबलपुर	12:00 से 4:00	30	आलोक पाण्डे जी	7 और 8 दिसंबर दो दिवसीय कांफ्रेंस
4	सागर	अजीम प्रेमजी फाउंडेशन अशोक विहार सागर	12:00 से 4:00	17	नवीन शर्मा जी	तय नहीं हुई

कार्यक्रम की कुछ प्रमुख उपलब्धियां इस प्रकार रहीं-

1. मेन्टर के मार्गदर्शन में कल्पनाशीलता को देखने का अभ्यास एवं विषय-वस्तु के कुछ महत्वपूर्ण प्रस्तावों पर चर्चा हुई।
2. विभिन्न प्रोजेक्ट्स के लिए सदस्यों की योग्यता की पहचान हो पाई।
3. विभिन्न विभागों के प्रशासनिक अधिकारियों, विद्यालयों के प्राचार्य आदि तक वस्तु को पहुँचाने के लिए संभावित विकल्पों पर चर्चा हुई।
4. समूह के गाइड एवं अन्य सदस्यों के साथ-साथ, कुछ सदस्य अपने परिजनों के साथ सम्मिलित हुए, जिससे परिवारजनों में भी इस कार्य हेतु आश्वस्ति एवं सहयोग के भाव का संचार हुआ।
5. आगामी माह में संभाग स्तर पर कॉन्फ्रेंस/सम्मेलन (एक/दो दिवसीय) के आयोजन का प्रस्तावित स्वरूप रखा गया। जिसमें प्रतिभागी के रूप में शिक्षक, विद्यार्थी, प्राचार्य, अभिभावक, शिक्षा-विभाग के अधिकारीगण आदि को सम्मिलित करने पर चर्चा हुई। लगभग 100 लोगों के साथ वृहद स्तर पर इस कार्य को पायलट प्रोजेक्ट के रूप में 'मॉडल विकसित करने की बात कही गई।
6. संभाग में मानवीय मूल्यों के प्रसार हेतु प्रेरक सत्र , पैनल डिस्कशन, छोटे समूह संवाद, जैसे- शिक्षक, छात्र–छात्राओं, अधिकारियों के मध्य यूएचवी के अनुभव साझा करने, आदि सुझाव निकल कर आए।
7. सभी संभावित कार्यशालाओं, सम्मेलनों, पायलट प्रोजेक्ट्स व अन्य कार्यक्रमों के आयोजन में आने वाले व्यावहारिक कठिनाइयों एवं उसके संभावित समाधान पर सारगर्भित चर्चा सभी प्रतिभागियों द्वारा की गई।

भोपाल संभाग

सागर संभाग

रीवा संभाग

जबलपुर संभाग

ऑनलाइन साप्ताहिक सभाएं

मंगलवार मीटिंग : स्वयं के विकास और समूह के विकास के संदर्भ में योजना कार्यक्रम बनाने, उनका क्रियान्वयन एवं मूल्यांकन के आशय से प्रत्येक मंगलवार सांय 7:00 से 8:30 बजे तक एक ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया जाता है। इसमे लगभग 130 लोग नियमित रूप से जुड़ते हैं। प्रत्येक बुधवार को होने वाली इस संभागवार मीटिंग की रिपोर्ट संभाग स्तरीय कोर टीम द्वारा साँझा की जाती हैं एवं मध्यप्रदेश में चल रहे यूएचवि के प्रयासों की समीक्षा की जाती है।

मंगलवार मीटिंग रिकॉर्ड					
	2 सितंबर	9 सितंबर	16 सितंबर	23 सितंबर	30 सितंबर
कुल सदस्य	55	55	55	55	55
उपस्थित सदस्य	35	35	34	37	33

बुधवार मीटिंग: संभाग स्तर पर टीम को विकसित होने में सहयोग करने हेतु सात संभागों कीऑनलाइन साप्ताहिक मीटिंग का आयोजन प्रत्येक बुधवार को शाम 7 से 8:30 बजे तक किया जाता है। पाँच-सदस्यीय संचालन समिति अपने संभाग के लगभग 20-25 सदस्यों के साथ इस मीटिंग को संचालित करते हैं। इसमे स्वमूल्यांकन एवं विषयवस्तु की प्रस्तुति के साथ ही आगामी बुधवार मीटिंग की कार्ययोजना पर भी चर्चा की जाती है। संभाग गाइड द्वारा मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। इस मीटिंग की रिपोर्ट अगले मंगलवार की मीटिंग में प्रस्तुत की जाती है।

संभागवार (बुधवार मीटिंग) स्व मूल्यांकन रखने वाले सदस्यों का विवरण

	ग्वालियर	रीवा	इंदौर	उज्जैन	सागर	भोपाल	जबलपुर
मीटिंग दिनांक	8 अक्टूबर	8 अक्टूबर	8 अक्टूबर	8 अक्टूबर	8 अक्टूबर	8 अक्टूबर	8 अक्टूबर
प्रस्तुत कर्ता का नाम	अलका गौर जी, अवध प्रताप जी	राजीव मिश्र जी, मंजू लता पाण्डेय जी	भारती सोनी जी, अनीता पाण्डेय जी	प्रीटी बाला जी, कृपाली जी	आरती जी, श्रध्हा जी	बसंत जी , रूचि जी	सोमनाथ जी, मनीष सोनी जी
मीटिंग दिनांक	15 अक्टूबर	15 अक्टूबर	15 अक्टूबर	15 अक्टूबर	15 अक्टूबर	15 अक्टूबर	15 अक्टूबर
प्रस्तुत कर्ता का नाम	प्रसन्न जी, गजेन्द्र जी	पूनम जी	सुधा वाजपेयी जी ,	सीमा अग्निहोत्री जी	सुरेन्द्र जी , मुकेश कुमार पचौरी जी	शिवप्रकाश जी, वंदना जी	शरद जी , पूनम मालविया जी
मीटिंग दिनांक	22 अक्टूबर	22 अक्टूबर	22 अक्टूबर	22 अक्टूबर	22 अक्टूबर	22 अक्टूबर	22 अक्टूबर
प्रस्तुत कर्ता का नाम	दीपावली मिलन सभा						
मीटिंग दिनांक	29 अक्टूबर	29 अक्टूबर	29 अक्टूबर	29 अक्टूबर	29 अक्टूबर	29 अक्टूबर	29 अक्टूबर
प्रस्तुत कर्ता का नाम	गजेन्द्र जी, मनोज दिवेदी जी	रत्नेश जी	संगीता जी, मिनाक्षी जी	हिरा लाल जी, सुनीता पवार जी	किर्तिकम जी ,हर्ष जी	कुमकुम जी ,मंजू जी	श्रीध पाठक जी , विप्र मोदी जी

संभागवार (बुधवार मीटिंग) प्रस्तुतकर्ताओं का विवरण (By- Rachana didi)

	ग्वालियर	रीवा	इंदौर	उज्जैन	सागर	भोपाल	जबलपुर
मीटिंग दिनांक	15 अक्टूबर	15 अक्टूबर	15 अक्टूबर	15 अक्टूबर	15 अक्टूबर	15 अक्टूबर	15 अक्टूबर
प्रस्तुत कर्ता का नाम	अलका चतुर्वेदी जी, साकेत जी	आशा तिवारी जी,	महर्षि जी, अंजू गौतम जी	कैलाश भवसार	मुकेश पचौरी जी, श्रध्हा जी	निशा जी कुमकुम जी	रमेश नापित जी
मीटिंग दिनांक	22 अक्टूबर	22 अक्टूबर	22 अक्टूबर	22 अक्टूबर	22 अक्टूबर	22 अक्टूबर	22 अक्टूबर
प्रस्तुत कर्ता का नाम	दीपावली मिलन सभा						
मीटिंग दिनांक	29 अक्टूबर	29 अक्टूबर	29 अक्टूबर	29 अक्टूबर	29 अक्टूबर	29 अक्टूबर	29 अक्टूबर
प्रस्तुत कर्ता का नाम	अवध्प्रताप जी, ब्रजेश	मनीष गौतम जी	मिनाक्षी जी, महिषी जी	गिरीश सारस्वत जी	वैदेही जी , रवि शंकर जी	रेणुका जी, भागवतजी	शरद जी, ऋतुराज जी

शुक्रवार मीटिंग : मध्यप्रदेश के समस्त आनंद सभा प्रशिक्षित शिक्षकों के साथ प्रत्येक शुक्रवार को सांय 6:00 से 7.30 बजे तक एक ऑनलाइन मीटिंग का आयोजन किया जाता है। शास. सांदीपनि उ. मा. विद्यालयों में प्रत्येक शनिवार को होने वाली 'आनंद-सभा' की विषय-वस्तु पर शिक्षकों में स्पष्टता एवं गहराई लाने के आशय से मुख्य प्रबोधक द्वारा चर्चा की जाती है। इसके साथ ही शिक्षकों की शंकाओं का समाधान भी किया जाता है। शनिवार को अपने-अपने विद्यालय में छात्रों के साथ आनंद सभा का संचालन हेतु उन्हें आवश्यक मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। इस मीटिंग मे लगभग 700 शिक्षकों के साथ संवाद किया जाता है।

क्रमांक	दिनाँक/दिन	उपस्थित प्रतिभागी	विषय- वस्तु	प्रबोधक	अतिथि
1	26/09/2025	507	मानव में व्यवस्था	श्री कौशल किशोर बुटोलिया जी	श्रीमती संगीता ठाकुर जी
2	03/10/2025	558	मैं (स्वयं) व शरीर में व्यवस्था	श्री पवनेन्द्र जी	----
3	10/10/2025	364	स्वयं में व्यवस्था	श्री पवनेन्द्र जी	श्री रंजन शर्मा जी
4	17/10/2025	330	मैं (स्वयं) की शरीर के साथ व्यवस्था	नवीन कुमार शर्मा जी	

आरएएस-यूएचवी के आगामी कार्यक्रम व योजनायें

क्र.	दिनाँक	कार्यक्रम	कार्यक्रम स्थल
1	26 अक्टूबर 2025	स्नेह संचार सभा	ग्वालियर संभाग में
2	27 से 29 अक्टूबर 2025	आनंद की ओर UHV-I तीन दिवसीय कार्यशाला	आइकफ़ आश्रम शाहपुरा भोपाल
3	02 नवम्बर 2025	स्नेह संचार सभा	इंदौर व उज्जैन संभागों में
4	03 से 08 नवम्बर 2025	फैकल्टी डेवलपमेंट UHV-II छः दिवसीय कार्यशाला (उच्च शिक्षा)	सेंट्रल पुलिस अकादमी (CAPT) कोकता, भोपाल
5	12 से 14 नवम्बर 2025	आनंद की ओर UHV-I तीन दिवसीय कार्यशाला	राज्य आनंद संस्थान भोपाल

अन्य जगहों पर यूएचवी के प्रमुख प्रयास

S. No.	PROPOSED START DATE	PROPOSED END DATE	TYPE OF FDP	FULL NAME OF INSTITUTE
1	6-Oct-2025	10-Oct-2025	UHV-II (5-day)	Thiagarajar College of Engineering, Madurai, Tamil Nadu
2	23-Oct-2025	25-Oct-2025	Introductory (3-day)	Jain College of Engineering and Technology, Hubballi
3	23-Oct-2025	25-Oct-2025	Introductory (3-day)	SRM Institute of Science and Technology, Modinagar, Ghaziabad
4	2-Oct-2025	4-Oct-2025	Introductory (3-day)	Govind Ballabh Pant Institute of Engineering and Technology, Pauri
5	30-Oct-2025	1-Nov-2025	Introductory (3-day)	Engineering college, Bharatpur, Rajasthan

पाठकों के फीडबैक

"जब हम भावनाओं के साथ एक-दूसरे से जुड़कर काम करते हैं तो यह एक विश्व के प्रति जिम्मेदारी का संकल्प जैसा प्रतीत होता है। मैं मानता हूँ कि यह कार्य केवल व्यक्तिगत दायित्व नहीं है बल्कि सामूहिक प्रयास का परिणाम है। यह कार्य निष्ठा से करने पर एक यज्ञपूर्ण स्थिति का अनुभव कराता है। सबके सहयोग से यह कार्य यहाँ तक पहुँचा है। संचारिका के संदर्भ में मेरा सुझाव है कि इसे विद्यालय की लाइब्रेरी तक पहुँचाना चाहिए ताकि अधिक से अधिक छात्र इससे लाभान्वित हो सकें।
मैं प्रयास करूँगा कि विद्यालय की लाइब्रेरी में संचारिका की प्रतियां उपलब्ध हो। प्रिंट निकालकर बच्चों तक इसे पहुँचाने का प्रयास रहेगा जिससे वे भी इस पठन-पाठन का हिस्सा बन सकें। आनंदमय जीवन और सामूहिक प्रयासों का महत्व तभी है जब हम सब मिलकर जिम्मेदारी उठाएँ और आने वाली पीढ़ियों तक इसे पहुँचाएँ।"

बसंत सेन, उच्च माध्यमिक शिक्षक, संकुल केंद्र प्रभारी, शास. उ. मा. विद्यालय पीपलखेडा, विदिशा

"मुझे बहुत अच्छा लग रहा है कि हमारी टीम के द्वारा इतनी मेहनत से संचारिका तैयार की गई है। विभिन्न गतिविधियों को विस्तृत रूप में न रखकर संक्षेप में प्रस्तुत करना वास्तव में एक कला है। संचारिका के माध्यम से प्रदेश मे संचालित यूएचवी गतिविधियों का सार प्रस्तुत करना, कम समय में सम्पूर्ण गतिविधियों को समेटना अपने आप में एक बड़ी बात है। इससे यह अनुभव होता है कि प्रदेश भर में शिक्षा और गतिविधियों को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास हो रहा है। हमारे विद्यालय ने भी इस सोच को अपनाया है।
बच्चों को इससे जोड़ने के लिए जो ऑनलाइन कार्यशाला की योजना बनाई गयी हैं उसमें भी कई बच्चों को सम्मिलित किया है। इस माध्यम से वे भी इस प्रक्रिया का हिस्सा बन रहे हैं। अंत में, मैं पूरी टीम को धन्यवाद और शुभकामनाएँ देता हूँ।

बलवीर सिंह बुंदेला, उच्च माध्यमिक शिक्षक, शास. बालक उ. मा. विद्यालय, हट्टा, बालाघाट

"राज्य आनंद संस्थान एवं यूएचवी सेल के प्रयास समाज को सही दिशा में ले जाने के लिए अत्यंत आवश्यक हैं। राज्य आनंद संस्थान एवं यू एच वी वॉलंटियर्स अपने अथक प्रयासों के साथ सफलता के लिए अग्रसर है। हम जैसे सभी लोग जिस समाज की मात्र कल्पना कर सकते थे, निकट भविष्य में साकार होते देख पाएंगे। आनंद संचारिका पत्रिका न केवल आरएएस एवं यूएचवी सेल की गतिविधियों से अवगत कराती है बल्कि इसमें सम्मिलित लेख भी हमारी समझ को सही दिशा प्रदान करने में अनोखी भूमिका निभा रहे हैं। ये पाठकों के लिए एक प्रेरणा स्रोत है जिसके माध्यम से मध्य प्रदेश के अलावा देश के अन्य क्षेत्रों में भी इन प्रयासों के लिए उत्साह बनता हुआ प्रतीत होता है।"

रीना शर्मा, असिस्टेंट प्रोफेसर, आई ई सी कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, ग्रेटर नोएडा, उ. प्र.

“आनंद संचारिका” का सितम्बर 2025 अंक पढ़कर मन में एक आत्मिक संतोष और ऊर्जा का अनुभव हुआ। यह पत्रिका केवल शब्दों का संग्रह नहीं, बल्कि जीवन में सकारात्मकता, कृतज्ञता और संतुलन के भावों को जगाने वाला एक जीवंत माध्यम है।

एक शिक्षक के रूप में मुझे यह देखकर विशेष आनंद हुआ कि इस अंक में विद्यालयों में आयोजित आनंद गतिविधियों, शिक्षकों की अनुभूतियों, ध्यान-सत्रों, योग, और सामुदायिक सहभागिता को जिस संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया गया है, वह वाकई प्रेरणादायक है। हर लेख यह संदेश देता है कि आनंद का स्रोत बाहर नहीं, बल्कि हमारे भीतर है— हमारी सोच, दृष्टिकोण और कर्म में है। अंक में शामिल विषय जैसे —“जीवन में कृतज्ञता का भाव”, “स्वस्थ मन से स्वस्थ समाज”, “आत्म-संवाद और ध्यान”, “शिक्षकों की प्रेरक पहलें” —सभी पाठकों को अपने भीतर झाँकने और आत्मविकास की ओर बढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। “आनंद संचारिका” वास्तव में शासन की एक संवेदनशील पहल है, जो समाज में मानवीयता, संवेदना और आत्म-जागरूकता के बीज बो रही है। यह न केवल सरकारी कार्य का दस्तावेज़ है, बल्कि मानवता की नई परिभाषा प्रस्तुत करने वाला सामाजिक आंदोलन है। मैं आनंद विभाग और सम्पादकीय टीम को इस उत्कृष्ट और प्रेरक अंक के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। ऐसी पत्रिकाएँ ही हमें यह याद दिलाती हैं कि सच्चा विकास तब होता है जब मन में संतुलन और आनंद हो।

सत्यम पांडेय, उच्च माध्यमिक शिक्षक , शास. सांदीपनि कमला नेहरू उ.मा.विद्यालय, टी टी नगर, भोपाल

“आनंद संचारिका पत्रिका आज के इस व्यस्त जीवन को समझने हेतु अत्यावश्यक मार्गदर्शिका के रूप में प्रभावी रूप से कार्यकारिणी है। यह पत्रिका जटिल मानवीय संबंधों को सरल और निर्मल बनाने एवं विचारों की शुद्धि में बहुत मददगार साबित हुई है। आनंद संचारिका पत्रिका का नियमित प्रकाशन अपेक्षित है।”

हरिओम सोलंकी, उच्च माध्यमिक शिक्षक, शास. सांदीपनि उ.मा.विद्यालय, जावर

“आनंद संचारिका” पुस्तक निश्चित ही आनंद का संचार करती है। आनंद केवल बाहरी नहीं, बल्कि आंतरिक आनंद — अर्थात आत्मिक आनंद — की प्रदाता है। यह पुस्तक एक अन्वेषण और चिंतनशील प्रक्रिया के माध्यम से मानव को स्वयं तथा अस्तित्व समग्र की सही समझ विकसित करने का प्रस्ताव देती है ताकि व्यक्ति केवल भौतिक सुख-सुविधाओं पर निर्भर रहने के बजाय सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के आधार पर एक निरंतर सुखी (आनंदित) और व्यवस्थित जीवन जी सके तथा समाज में भी शांति और समृद्धि सुनिश्चित कर सके।”

विष्णु प्रजापति, माध्यमिक शिक्षक, शास. उ. मा. विद्यालय, मोहम्मदपुर मछनाई, शाजापुर

“आनंद संचारिका” पत्रिका एक शिक्षाप्रद और प्रेरणादायक मासिक पत्रिका है। यह समाज, संस्कृति, शिक्षा, विज्ञान, पर्यावरण और साहित्य से जुड़ी उपयोगी जानकारियाँ प्रदान करती है। इसकी भाषा सरल, रोचक और प्रभावशाली है। इसमें प्रकाशित लेख और कविताएँ ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक हो0 ती हैं। पत्रिका का उद्देश्य लोगों में जागरूकता, नैतिकता और सकारात्मक सोच का प्रसार करना है। यह विद्यार्थियों में पढ़ने, सोचने और अच्छे संस्कारों को विकसित करने में सहायक है। हर अंक में कुछ नया और सीखने योग्य सामग्री होती है, जिससे यह पत्रिका शिक्षा के साथ-साथ मनोरंजन का भी सुंदर माध्यम बन जाती है।”

नीरज शर्मा, उच्च माध्यमिक शिक्षक, शास. उत्कृष्ट बाल विनय मंदिर, उ.मा. विद्यालय, इंदौर

यूएचवी छात्रों की दृष्टि से

"आनंद सभा से जुड़ने के बाद मेरे व्यवहार में परिवर्तन मैं स्वयं मे महसूस कर पा रहा हूं। मै सुख और समृद्धि के सही अर्थ को समझ पाया। विश्वास, सम्मान जैसे भावों को समझ पाया। पहले मै श्रेष्ठता को सबसे श्रेष्ठ होना समझता था जो कई बार तनाव का कारण भी बनता था, पर आनंद सभा में श्रेष्ठता को ठीक से समझ पाया। अब निर्णय लेते समय मैं स्वयं मे जांच परख की प्रक्रिया को चला पाता हूं। आनंद सभा ने मेरी जीवन को देखने की दृष्टि बदल दी है।"

शिवम चौहान, कक्षा-10 शास. सांदीपनि उ. मा. विद्यालय, बेरजा, ग्वालियर

"यू.एच.वी. के बारे मे मैने इसी वर्ष जाना। प्रत्येक शनिवार को होने वाली आनंद सभा की क्लास मे जब सर ने यह विषय पढ़ाना शुरू किया, तब चारों स्तर की व्यवस्था पर ध्यान गया। जीवन जीने का तरीका बदला। अक्टूबर माह में आयोजित ऑनलाइन कार्यशाला मे जुड़ने से बहुत सारे प्रश्नों के उत्तर मिले। स्वयं को जानना और व्यवस्था में जीने की समझ बन रही है। मै आशा करती हूं कि भविष्य में मै निश्चित मानवीय मूल्यों के साथ जीते हुए एक उत्तम समाज की स्थापना कर पाऊंगी। इसके लिए मै पूरी यूएचवी टीम की आभारी हूं।"

पल्लवी जाटव, कक्षा-9, शास. सांदीपनि उ.मा. विद्यालय बेरजा, ग्वालियर

"जब से मैंने यूएचवी की कक्षाएं ली हैं मुझमें बहुत सुधार आया है। मेरा ध्यान मेरी आवश्यकताओं पर गया, अब जो भी मेरे पास उपलब्ध वस्तु है मैं उसका सदुपयोग करती हूँ। माता पिता से किसी वस्तु के लिए जिद नहीं करती , सभी का सम्मान करती हूँ और मेरा गुस्सा भी कम हुआ है। मुझे आनंद सभा की क्लास लेकर बहुत आनंद मिलता है।"

पूजा बघेल, कक्षा-9, सांदीपनि शास. उ. मा. विद्यालय नरवर, शिवपुरी

"पहले मेरा ध्यान बाहर ज्यादा रहता था और दूसरों की कमियों को मैं ज्यादा देखती थी। जब से आनंद सभा की कक्षाओं में मानवीय मूल्यों को जाना है, उसके बाद से धीरे-धीरे मेरा ध्यान खुद की कमियों पर भी जाता है। सही-समझ के साथ स्वयं की कमियों को सुधारने का प्रयास करती हूँ।"

चंचल, कक्षा-12, शास. सांदीपनि उ. मा. विद्यालय अहिल्याश्रम, इंदौर

"आनंद सभा में यूएचवी के अध्ययन के माध्यम मुझे समझ, संबंध और सुविधा पर ध्यान देने में सहायता मिली। संबंधों में कृतज्ञता और स्नेह के भाव पर सबसे अधिक ध्यान गया। मैं जीवन को सही-समझ और सही-भाव से जीने के लिए प्रयासरत हूँ। हाल ही मैं हुई यूएचवी कार्यशाला में प्रतिभाग के बाद, अब मैं चीजों को सही-भाव और सहज-स्वीकृति के साथ देखने का प्रयास करती हूँ।"

मनीषा दाँगी, कक्षा-12, शास. सांदीपनि उ. मा. विद्यालय अहिल्याश्रम, इंदौर

"आनंद संचारिका पत्रिका हमारे शिक्षक श्री महेंद्र तोमर सर ने पढ़ने के लिए कहा। उन्होंने पूरी कक्षा में प्रिंट निकालकर 32 बच्चों में वितरित की। मुझे इसका कंटेंट बहुत अच्छा लगा। इसमें अच्छी बाते लिखी है जो हमारे जीवन के लिए महत्वपूर्ण हैं। सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के लिए पत्रिका का प्रकाशन अति सुंदर कार्य है।"

मीनाक्षी पटेल, कक्षा 12वीं (गणित) शास. उ. मा. विद्यालय, खड़ी हाट (आष्टा)

"आनंद संचारिका" पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई। इसमें दी गई जानकारी बच्चों में सकारात्मक ऊर्जा, शिक्षा व संस्कार का संतुलन प्रस्तुत करती हैं। इसकी भाषा सरल और सहज है तथा संचारिका को पढ़कर सुखद अहसास हुआ। यह पत्रिका निश्चित ही विद्यालयीन वातावरण को प्रेरणादायी बनाएगी।"

पराग, कक्षा 11वीं, गणित शास. उत्कृष्ट उ.मा. विद्यालय पानसेमल, बड़वानी

मूल्य प्रेरणा पुष्प

कविता : कौन हूँ मैं...?

श्रद्धा गुप्ता
आनंद सभा नोडल अधिकारी
राज्य आनंद संस्थान, भोपाल

कौन हूँ मैं?...क्या चाहती हूँ?

कौन हूँ मैं?.....क्या चाहती हूँ?
कौन हूँ मैं !!!! शरीर हूँ या मन हूँ?
कल्पनाएँ हैं मुझमें , जीव हूँ या चेतन हूँ?

भावों का दरिया हूँ या सोचता-सा मन हूँ!
सुख चाहूँ मैं हमेशा, इस आस में हरदम हूँ।
क्या रहता बोलो हरदम, चहुँ ओर सुख का आलम?
हम चाहते हैं खुशियाँ, क्यूँ मिल जाता हमें ग़म ??

हर शख्स चाहता है खुश रहकर खुशियाँ देना,
लेकिन समझ ना पाता, कैसे सुखी है रहना?
संबंधों में मधुरता, भावों की समझ से आती,
गहरा-सा मर्म है ये, दुनिया समझ ना पाती।।

उलझे हुए यहाँ सब, सुविधाएँ जुटाने में,
सुविधाएँ भोगने में, तोहफों से लुभाने में।
भावों की उलझनें और भावों की पीड़ा दुःख है,
आया है समझ मुझको, संबंधों में ही सुख है।।

संबंधों की समझ में गहरे मूल्य समाहित हैं,
विश्वास और सम्मान, स्नेह से सिंचित हैं।
ममता, वात्सल्य, श्रद्धा, गौरव और कृतज्ञता,
पूर्ण मूल्य 'प्रेम' से आती, भावों में सहजता।।

दुनिया का हर मानव, ग़र मूल्य ये अपना ले,
सार्वभौम सत्य "सह-अस्तित्त्व" को सजा ले।
रह पायेगा निरंतर सुखी और समृद्ध मानव,
आनंद बिखरेगा तब आनंदित होंगे हम सब।।

विद्यालयों से प्राप्त आनंद सभा की झलकियाँ

शास. सांदीपनि उ.मा.विद्यालय, देवास

शास. सांदीपनि उ.मा.विद्यालय भेल, भोपाल

शास. सांदीपनि उ. मा. विद्यालय, गुलाना, शाजापुर

डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी शास. उ. मा. विद्यालय, भोपाल

शास. सांदीपनि उ.मा.विद्यालय मझगवां, सतना

शास. सांदीपनि उ.मा.विद्यालय आस्टा, सीहोर

शास . सांदीपनि उ.मा. विद्यालय डुंडा, सिवनी

शास. उत्कृष्ट उ. मा. विद्यालय, पन्ना

शास. सांदीपनि उ. मा.विद्यालय, नरसिंहगढ़

शास. सांदीपनि उ. मा. विद्यालय, सिलवानी

शास. सांदीपनि उ. मा.विद्यालय श्योपुर, ग्वालियर

शास. सांदीपनि उ. मा.विद्यालय, बालाघाट

शा. सांदीपनि उ. मा. विद्यालय, करताना, हरदा

शास. सांदीपनि उ.मा.विद्यालय, रामपुर बाघेलान, सतना

शास. उत्कृष्ट उ.मा.विद्यालय, कटनी

शास.उ.मा.विद्यालय,विद्याविहार भोपाल

सार्वभौमिक मानवीय मूल्य समाचार पत्रों की नज़र से

अग्निबाण

बच्चों में होगा नैतिक शिक्षा का विकास

आनंद विभाग द्वारा संभाग स्तरीय स्नेह संचार सभा का आयोजन

जबलपुर, अग्निबाण। राज्य आनंद संस्थान आनंद विभाग की संभाग स्तरीय स्नेह संचार सभा का आयोजन किया गया जिसमें लखनऊ से आई प्रबोधक डॉ. मनीषा शुक्ला और डॉ आलोक पाण्डे, डॉ विजयकांत तिवारी, डॉ गोविंद नारायण श्रीवास्तव, दीप्ति ठाकुर, डॉ मनीषा खरे ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया। प्रतिभा दुबे द्वारा सरस्वती वंदना गाई गई। डॉ आलोक पांडे द्वारा अभ्यास सत्र का संचालन किया गया। जिसमें उन्होंने मैं (जीवन) को मैं (जीवन) द्वारा देखने का अभ्यास के तीनों स्टेप से प्रतिभागियों को गुजारा, प्रतिभागियों ने इस बात को स्वयं में देखने का अभ्यास किया। उनमें समझ बनी कि सहज और स्वभाव के अनुकूल भाव के आधार पर ही मैं संगीत व्यवस्था में रहता हूँ ,सुखी रहता हूँ। डॉ विजयकांत तिवारी ने माननीय मूल्यों की शिक्षा पर बल दिया और परिवार मे रिश्तों को महत्वता को समझने हेतु प्रेरित किया। बीएल मिश्रा ने कहा कि सभी प्रकार की आध्यात्मिक किताबें पढ़ने से अच्छे संस्कारों को विकसित किया जा सकता है। मनीषा खरे, सुनीता शर्मा, रमेश नापित ने विद्यालय में सेल का गठन, आगामी कॉन्फ्रेंस, सम्मेलन का आयोजन, सदस्यों का पारिवारिक परिचय एवं प्राइवेट स्कूलों में फैकल्टी डेवलपमेंट के लिए चर्चा की गई। भोजन उपरांत डॉ मनीषा शुक्ला दीदी ने दिसंबर माह में आयोजित होने वाले संभावित दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस, सम्मेलन का प्रस्तावित स्वरूप रखा। जिसमें उन्होंने प्रतिभागी के रूप में शिक्षक, विद्यार्थी, प्रिंसिपल, अभिभावक, शिक्षा विभाग के अधिकारी को सम्मिलित करने का प्रस्ताव रखा। इस कार्य को पायलट प्रोजेक्ट के रूप में इसे मॉडल बनाने की बात कही गई। अल्पना श्रीवास्तव, सुनीता शर्मा, रमेश नापित, बरखा राजपूत, एस कोरी ने अपने यूएचवी के अनुभव साझा किए।

एक्सीलेंस स्कूल में कार्यक्रम आयोजित, रीवा, शहडोल, उमरिया एवं पन्ना के शिक्षक हुए शामिल

स्नेह संचार सभा में समरसता युक्त समाज के निर्माण पर चर्चा

स्टार समाचार | सतना

विद्यालय से परिवार तक मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए एक समरसता युक्त समाज के निर्माण हेतु राज्य आनंद संस्थान के सहयोग से शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय वेंकट क्रमांक-1, में स्नेह संचार सभा का आयोजन रविवार को किया गया। कार्यक्रम रीवा, शहडोल, उमरिया एवं पन्ना से भी शिक्षक शामिल हुए। जिला मास्टर ट्रेनर ईको क्लब मोहित गर्ग ने बताया कि स्नेह संचार सभा सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर विषय पर एक महत्वपूर्ण पहल है जिससे विद्यार्थी, अभिभावक एवं शिक्षक आत्म-विकास, सह-अस्तित्व और मानवीय संवेदनशीलता को प्रोत्साहित कर सकते हैं। इस आयोजन का संयोजन स्कूल शिक्षा विभाग, राज्य आनंद संस्थान तथा यूएचवी फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में किया गया।

कार्यक्रम में अगस्त एवं सितम्बर माह की स्नेह संचार सभाओं की समीक्षा की गई तथा सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों सेल के गठन एवं उसके क्रियान्वयन पर विस्तृत चर्चा हुई। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए दिसम्बर माह में आयोजित होने वाले संभाग स्तरीय सम्मेलन की रूपरेखा पर भी विचार-विमर्श किया गया। राज्य आनंद संस्थान से रिसोर्स पर्सन मोहित श्रीवास्तव तथा यूएचवी से रिसोर्स पर्सन भानु प्रताप एवं संजना ने सक्रिय भागीदारी करते हुए सभी प्रतिभागियों के साथ विचार साझा किए। कार्यक्रम के संचालन विद्यालय के शिक्षक पुष्पेंद्र सिंह एवं नन्द किशोर पाठक ने किया।

ये हुए शामिल

इस अवसर पर संभाग को-ऑर्डिनेटर डॉ. रामायण प्रसाद विश्वकर्मा, को-ऑर्डिनेटर अलका सिंह एवं शिवेश श्रीवास्तव, लीड वॉलेंटियर आशा तिवारी के अलावा सतना से मोहित गर्ग, दुर्गा देवी गौतम, कुंदन सिंह, मंजुलता, रामनरेश नामदेव, सतीश गुप्ता, पवन यादव, महेंद्र त्रिपाठी, अनिल रजक, डॉ. सुमंत सिंह, रीवा से बिपिन यादव, लक्ष्मीकांत गर्ग, रेनू साहू, उमरिया से सुषमा पटेल, शहडोल से राजीव मिश्रा, पन्ना से रमाकांत मिश्रा आदि शिक्षक उपस्थित रहे।

दैनिक सांध्य बन्धु से व्हाट्सएप ग्रुप पर जोड़ने के लिए क्यूआर कोड को स्कैन करें

दैनिक सांध्य बन्धु

"सबकी खबर ले, सबको खबर दें"

सोमवार, 13 अक्टूबर 2025 | www.sandhyabandhu.com

संभाग स्तरीय स्नेह संचार सभा में नैतिक शिक्षा और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर जोर

दैनिक सांध्य बन्धु जबलपुर

राज्य आनंद संस्थान, आनंद विभाग द्वारा जबलपुर में संभाग स्तरीय स्नेह संचार सभा का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य बच्चों में नैतिक शिक्षा का विकास और सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के माध्यम से शिक्षा का सृजन था। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. मनीषा शुक्ला (लखनऊ), डॉ. आलोक पांडे, डॉ. विजयकांत तिवारी (चीफ़ कमिश्नर, स्काउट गाइड), डॉ. गोविंद नारायण श्रीवास्तव (मास्टर ट्रेनर, रीवा), संरक्षक दीप्ति ठाकुर और समन्वयक डॉ. मनीषा खरे द्वारा दीप प्रज्वलन से किया गया। सरस्वती वंदना प्रतिभा दुबे ने प्रस्तुत की। डॉ. आलोक पांडे ने अभ्यास सत्र का संचालन करते हुए मैं (जीवन) को मैं (जीवन) के द्वारा देखने के तीनों चरणों से प्रतिभागियों को अवगत कराया। उन्होंने बताया कि सहज और स्वभाविक भाव के अनुरूप रहकर ही व्यक्ति सुखी रह सकता है। डॉ. विजयकांत तिवारी ने मानवीय मूल्यों की शिक्षा पर बल देते हुए पारिवारिक रिश्तों की महत्ता समझने की प्रेरणा दी। वहीं बी.एल. मिश्रा (शास. मनोविज्ञान एवं संदर्शन महाविद्यालय, जबलपुर) ने कहा कि आध्यात्मिक ग्रंथों के अध्ययन से अच्छे संस्कारों का विकास संभव है। इस अवसर पर डॉ. मनीषा खरे, सुनीता शर्मा और रमेश नापित ने विद्यालयों में ।।ङ्क सेल के गठन, आगामी कॉन्फ्रेंस/सम्मेलन के आयोजन, तथा प्राइवेट स्कूलों में फैकल्टी डेवलपमेंट पर चर्चा की। भोजन उपरांत डॉ. मनीषा शुक्ला ने दिसंबर माह में आयोजित होने वाले संभावित दो दिवसीय कॉन्फ्रेंस/सम्मेलन का प्रस्ताव रखा, जिसमें शिक्षक, विद्यार्थी, प्राचार्य, अभिभावक, शिक्षा विभाग के अधिकारी एवं आरएएस/यूएचवी सदस्यों की सहभागिता का सुझाव दिया गया। लगभग 100 प्रतिभागियों के साथ इस कार्य को पायलट प्रोजेक्ट के रूप में मॉडल बनाने का विचार प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम में अल्पना श्रीवास्तव, सुनीता शर्मा, रमेश नापित, बरखा राजपूत और एस. कोरी ने अपने यूएचवी अनुभव साझा किए। मंजूषा श्रीवास्तव, प्राचार्य, शासकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय ब्यौहारबाग ने समाजहित में इस आयोजन की सराहना की। अंत में दीप्ति ठाकुर, संरक्षक यूएचवी आनंद विभाग ने सभी का आभार व्यक्त किया।

उत्कृष्ट विद्यालय में स्नेह संचार सभा आयोजित

▶ सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर विषय पर हुआ मंथन

नवभारत न्यूज

सतना 12 अक्टूबर. विद्यालय से परिवार तक मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए एक समरसता युक्त समाज के निर्माण के लिए राज्य आनंद संस्थान के सहयोग से शासकीय उत्कृष्ट उमा विद्यालय व्यंकट क्र. 1 में स्नेह संचार सभा आयोजित की गई.

जिला मास्टर ट्रेनर ईको क्लब मोहित गर्ग द्वारा जानकारी देते हुए बताया गया कि स्नेह संचार सभा सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर विषय पर एक महत्वपूर्ण पहल है. जिसके माध्यम से विद्याथी, शिक्षक और अभिभावक को आत्म विकासख सह अस्तित्व और मानवीय संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करना प्रमुख उद्देश्य है. इस आयोजन का संयोजन स्कूल शिक्षा विभाग, राज्य आनंद संस्थान और यूएचवी फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में किया गया. इस अवसर पर संभाग कोऑर्डिनेटर डॉ. रामायण प्रसाद विश्वकर्मा, को-कोऑर्डिनेटर अल्का सिंह, व शिवेश श्रीवास्तव, लीड वॉलेंटियर आशा तिवारी के साथ साथ मोहित गर्ग, दुर्गा देवी गौतम, कुंदन सिंह, मंजूलता, रामनरेश नामदेव, सतीश गुप्ता, पवन यादव, महेंद्र त्रिपाठी, अनिल रजक, डॉ. सुमंत सिंह, रीवा से विपिन यादव, लक्ष्मीकांत गर्ग, रेनू साहू, उमरिया से सुषमा पटेल, शहडोल से राजीव मिश्रा, पन्ना से रमाकांत मिश्रा सहित अन्य शिक्षक उपस्थित रहे. इसके साथ ही राज्य आनंद संस्थान से रिसोर्स पर्सन मोहित श्रीवास्तव और एआईसीटीई से रिसोर्स पर्सन भानु प्रताप व संजना ने भी सक्रिय भागीदारी निभाई.

स्नेह संचार सभा का आयोजन

संपन्न अरुण गर्ग चीफ ब्यूरो लाइव इंडिया न्यूज सतना। मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए एक समरसता युक्त समाज के निर्माण हेतु राज्य आनंद संस्थान के सहयोग से शासकीय उत्कृष्ट उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, वेंकट क्रमांक-1, में स्नेह संचार सभा का आयोजन किया गया जिसमें जिला मास्टर ट्रेनर ईको क्लब मोहित गर्ग लकी द्वारा बताया गया कि स्नेह संचार सभा ~सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर÷ विषय पर एक महत्वपूर्ण पहल है जिससे विद्यार्थी -अभिभावक-शिक्षक एक मंच पर स्नेह संचार सभा के माध्यम से शिक्षा में आनंद और मानव मूल्यों के समन्वय के माध्यम से विद्यार्थियों में आत्म-विकास, सह-अस्तित्व और मानवीय संवेदनशीलता को प्रोत्साहित करना है। इस आयोजन का संयोजन स्कूल शिक्षा विभाग, राज्य आनंद संस्थान तथा ।।ङ्क फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। कार्यक्रम में अगस्त एवं सितम्बर माह की स्नेह संचार सभाओं की समीक्षा की गई तथा सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों (HV) सेल के गठन एवं उसके क्रियान्वयन पर विस्तृत चर्चा हुई। इसके अतिरिक्त, शिक्षकों और विद्यार्थियों के लिए दिसम्बर माह में आयोजित होने वाले संभाग स्तरीय सम्मेलन की रूपरेखा पर भी विचार-विमर्श किया गया। इस अवसर पर संभाग कोऑर्डिनेटर डॉ. रामायण प्रसाद विश्वकर्मा, को-कोऑर्डिनेटर अलका सिंह एवं शिवेश श्रीवास्तव, लीड वॉलेंटियर आशा तिवारी सहित सतना से

मोहित गर्ग, दुर्गा देवी गौतम, कुंदन सिंह, मंजुलता, रामनरेश नामदेव, सतीश गुप्ता, पवन यादव, महेंद्र त्रिपाठी, अनिल रजक, डॉ. सुमंत सिंह, रीवा से बिपिन यादव, लक्ष्मीकांत गर्ग, रेनू साहू, उमरिया से सुषमा पटेल, शहडोल से राजीव मिश्रा, पन्ना से रमाकांत मिश्रा आदि शिक्षक उपस्थित रहे।

राज्य आनंद संस्थान से रिसोर्स पर्सन मोहित श्रीवास्तव तथाAICTE से रिसोर्स पर्सन भानु प्रताप एवं संजना ने सक्रिय भागीदारी करते हुए सभी प्रतिभागियों के साथ विचार साझा किए।एवं कार्यक्रम के संचलन सहयोग में विद्यालय के शिक्षक पुष्पेंद्र सिंह एवं नन्द किशोर पाठक तथा भ्रत्य बनवारी लाल , राजमणि साहू रहे।

वेंकट क्रमांक-1 विद्यालय में स्नेह संचार सभा

शिक्षा में आनंद और मानवीय मूल्यों के समन्वय पर हुआ विचार-विमर्श

सतना @ पत्रिका. हायर सेकंडरी विद्यालय वेंकट क्रमांक-1 में रविवार को "स्नेह संचार सभा : सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर" विषय पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह आयोजन शिक्षा में आनंद और मानवीय मूल्यों को सशक्त बनाने के उद्देश्य से किया गया, जिसमें शिक्षकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों ने उत्साहपूर्वक सहभागिता की।

संचालन स्कूल शिक्षा विभाग, राज्य आनंद संस्थान और यूएचवी फाउंडेशन के संयुक्त तत्वावधान में हुआ। जिला मास्टर ट्रेनर मोहित गर्ग ने बताया कि इस सभा का उद्देश्य विद्यार्थियों में आत्म-विकास, सह-अस्तित्व और संवेदनशीलता की भावना को मजबूत करना है। कार्यक्रम दोपहर 12 बजे से शाम 4 बजे तक चला, जिसमें अगस्त और सितंबर की गतिविधियों की समीक्षा की गई। यूएचवी सेल के गठन और क्रियान्वयन पर चर्चा हुई। दिसंबर में आयोजित होने वाले संभाग स्तरीय सम्मेलन की रूपरेखा भी तय की गई। डॉ. रामायण प्रसाद विश्वकर्मा, अलका सिंह, शिवेश श्रीवास्तव, आशा तिवारी, मोहित श्रीवास्तव ने भाग लिया। संचालन पुष्पेंद्र सिंह और नंद किशोर पाठक ने किया।

पाठकों के लिए महत्वपूर्ण सूचना

आनंद संचारिका परिवार अपने सभी रचनाकारों एवं पाठकों का आभार व्यक्त करता है। पत्रिका के आगामी संस्करणों के लिए पाठकों/सदस्यों/छात्रों का स्वमूल्यांकन, सुझाव, यूएचवी गतिविधियाँ, लेख, कहानी आदि मौलिक रचनाएँ निम्न वर्गों में आमंत्रित है:-

1. कविता / लेख/कहानी/नाटक 2. चित्र/ पोस्टर/ यूएचवी गतिविधियाँ

पाठकगण कृपया ध्यान दें-

- अपनी रचना के साथ अपना नाम, संस्था का नाम, पता, जिला एवं अपना स्पष्ट फोटो अवश्य संलग्न करें।
- कृपया ई-मेल भेजते समय सब्जेक्ट में "संदेश का वर्ग" का उल्लेख अवश्य करें।
- आनंद संचारिका में सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों पर आधारित मौलिक रचनाएँ ही प्रकाशित की जाती हैं।
- रचना भेजने की अंतिम तिथि प्रत्येक माह की 15 तारीख है।
- कृपया रचनाएँ निम्न ई-मेल आईडी पर ही भेजें- anandsancharikauhv@gmail.com
- अन्य माध्यमों से भेजी गई, एक से अधिक अथवा विषय से भिन्न रचनाओं पर विचार नहीं किया जाएगा।
- किसी रचना/चित्र/अन्य सामग्री के प्रकाशन के अधिकार/ निर्णय केवल संपादक मंडल द्वारा लिया जाएगा।
- सभी प्रकाशन पूर्णतः निःशुल्क हैं।
- कॉपीराइट उल्लंघन दंडनीय है। इसकी संपूर्ण जवाबदेही आपकी होगी।

नोट-1: यूएचवी प्रशिक्षण प्राप्त प्राचार्य, शिक्षक एवं आनंद सभा (यूएचवी) के विद्यार्थी अपनी यूएचवी यात्रा संबंधी 'स्व-मूल्यांकन' पत्रिका में प्रकाशन हेतु ईमेल anandsancharikauhv@gmail.com आइडी पर भेजें।

नोट-2: पाठकगण भी पत्रिका के बारे में अपना फीडबैक पत्रिका में प्रकाशन हेतु ईमेल anandsancharikauhv@gmail.com आइडी पर भेजें।

-संपादक मंडल, आनंद संचारिका

राज्य आनंद संस्थान

स्थापना	–	अगस्त 2016 में राज्य आनंद विभाग के अंतर्गत गठन।
उद्देश्य	–	नागरिकों की आंतरिक अनुभूति और बाह्य सुख-समृद्धि सुनिश्चित करना।
मूल सिद्धांत	–	केवल भौतिक प्रगति से आनंद संभव नहीं है। यह मानसिक, शारीरिक व भावनात्मक उन्नति से ही संभव है। विकास को मूल्य आधारित और आनंद केंद्रित होना चाहिए।
प्रमुख कार्यक्षेत्र	–	नागरिकों को आनंद बढ़ाने वाली पद्धति व अभ्यास उपलब्ध कराना।

आनंद सभा

पृष्ठभूमि	–	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार शिक्षा में मूल्य, करुणा और सहानुभूति का विकास आवश्यक।
उद्देश्य	–	विद्यार्थियों में मानव लक्ष्य, मूल्य, संबंधों की समझ व सम्यक दृष्टि विकसित करना।
सामग्री एवं प्रशिक्षण	–	"सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों से आनंद की ओर" पुस्तकों व वर्कबुक का निर्माण किया गया है एवं शिक्षकों को कक्षा में इस विषय को पढ़ाने हेतु 6 दिवसीय प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।
कार्यक्रम	–	कक्षा 9 से 12 में हर शनिवार "आनंद सभा" के अंतर्गत यूएचवी सत्र व गतिविधियाँ तथा महाविद्यालयों में कार्यक्रम संचालन हेतु शिक्षकों की तैयारी।
परिणाम	–	विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास, जीवन-दृष्टि और मूल्यपरक आचरण का विकास।
सहयोगी संस्थान	–	AICTE, स्कूल शिक्षा विभाग, उच्च शिक्षा विभाग (म.प्र. शासन), राज्य आनंद संस्थान और यूएचवी फाउंडेशन ।

: संपर्क विवरण :

राज्य आनंद संस्थान, बोर्ड ऑफिस कैंपस, डीबी मॉल के पीछे शिवाजी नगर, भोपाल म. प्र. 462011

0755-2553434 ईमेल : (anandsancharikauhv@gmail.com) (anandsansthan@mp.gov.in)